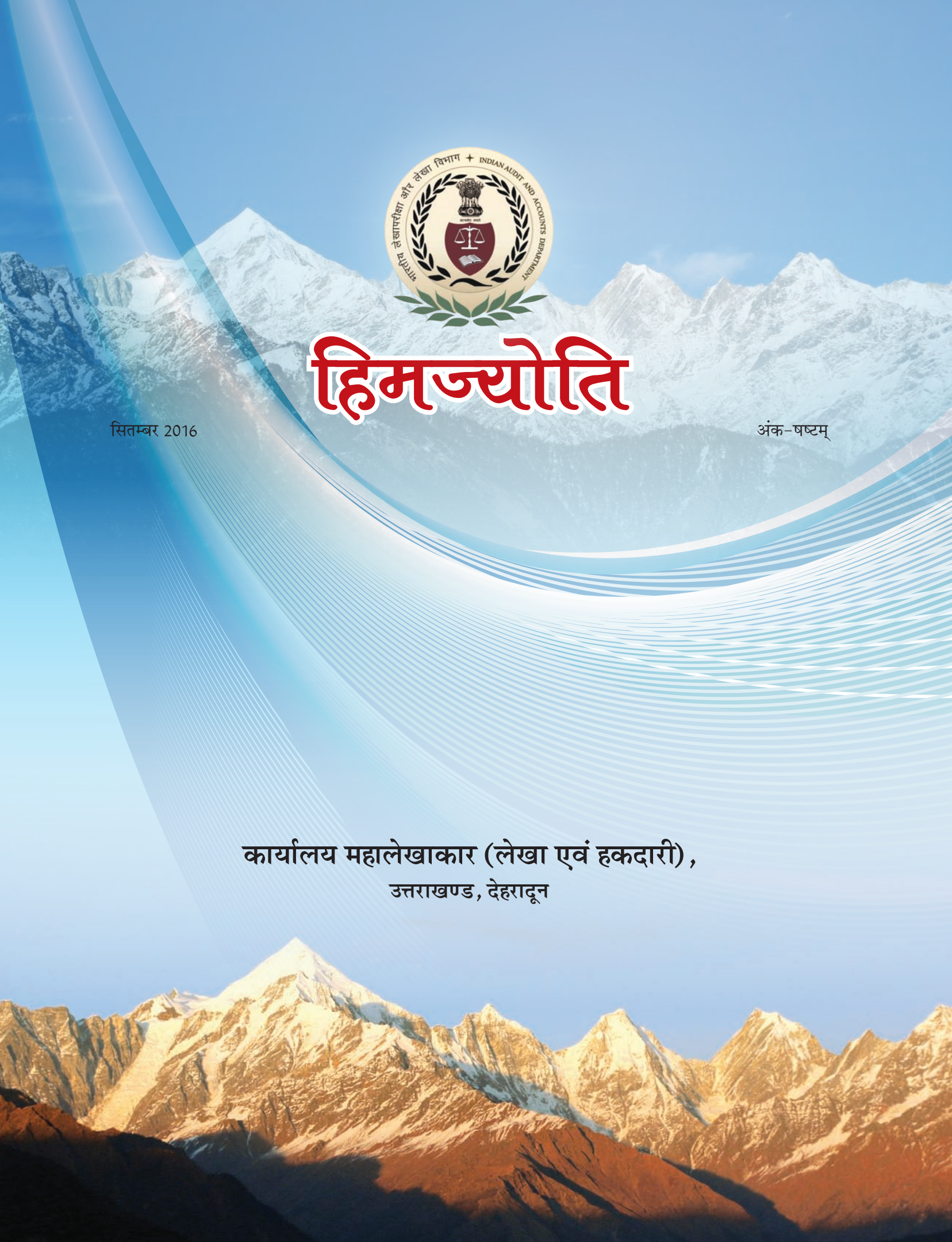
हिमज्योति

सितम्बर 2016

अंक-षष्टम्



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
उत्तराखण्ड, देहरादून



हिमज्योति

सितम्बर 2016

अंक–षष्टम्

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),

उत्तराखण्ड, देहरादून



सत्यमेव जयते

अशोक सिन्हा
महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड

संदेश

मेरे लिए यह अपार हर्ष का विषय है कि ''हिमज्योति'' पत्रिका का छठा संस्करण आपके कर–कमलों में अर्पित कर रहा हूँ। राजभाषा को समर्पित हमारी पत्रिका, हिन्दी के उन्नयन व प्रचार–प्रसार में सतत् प्रयासरत है, ऐसा मेरा मानना है।

हमारा राष्ट्र विविधताओं से परिपूर्ण है, यहां अनेक जाति, धर्म, भाषाओं व मान्यताओं का समावेश है। विश्व में शायद ही कहीं ऐसा समावेश नजर आता हो। ऐसी स्थिति में राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने के लिए यह आवश्यक था कि जन साधारण के विचारों के आदान–प्रदान के लिए एक सरल व सहज भाषा हो, इसकी पूर्ति 14 सितम्बर 1949 को हुई, जब हिन्दी को राजभाषा के सिंहासन पर आरूढ़ किया गया। यह हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम अपने आप को संविधान के प्रति समर्पित करते हुए अपने कार्यक्षेत्र में अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करें।

मैं सम्पादक मंडल के सदस्यों व रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ, जिनके अथक प्रयास से पत्रिका अपने उददेश्य में अग्रसर है।

संरक्षक एवं निदेशक

पत्रिका परिवार

संरक्षक एवं निदेशक	:	**श्री अशोक सिन्हा** महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
प्रधान संपादक	:	**श्री पुरुषोत्तम दास** वरि० उप महालेखाकार (प्रशासन एवं लेखा)
संपादक	:	**श्री महेश कुमार बत्रा** उप महालेखाकार (निधि)
सलाहकार संपादक	:	**श्री विनोद कुमार शर्मा** वरिष्ठ लेखाधिकारी
सहायक संपादक	:	**श्री भास्करानन्द त्रिपाठी** सहायक लेखाधिकारी
		श्री सुशील देवली सहायक लेखाधिकारी
	:	**श्री महावीर सिंह रावत** सहायक लेखाधिकारी
	:	**श्री दिनेश कुमार** सहायक लेखाधिकारी
साज–सज्जा एवं टंकण	:	**श्रीमती दीपा पंवार** कनिष्ठ अनुवादक
		श्री अमित कुमार डी.ई.ओ.
आवरण पृष्ठः औली, चमोली	:	**श्री अविनाश रंजन** सहायक लेखाधिकारी
पार्श्व पृष्ठः कुम्भ, हरिद्वार	:	**श्री दिनेश कुमार** सहायक लेखाधिकारी
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा

रचनाकारों के विचारों से संपादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।

'हिमज्योति परिवार'



(बैठे हुए–बायें से दायें)–**श्री पुरुषोत्तम दास,** वरि० उप महालेखाकार (प्रशा० एवं लेखा)–**प्रधान संपादक, श्री अशोक सिन्हा,** महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–**संरक्षक एवं निदेशक** तथा **श्री महेश कुमार बत्रा,** उप महालेखाकार (निधि)–**संपादक**

(खड़े हुए–बायें से दायें)–**श्री दिनेश कुमार,** सहा० लेखाधिकारी–**सहायक संपादक, श्री भास्करानन्द त्रिपाठी,** सहा० लेखाधिकारी –**सहायक संपादक, श्री विनोद कुमार शर्मा,** वरिष्ठ लेखाधिकारी–**सलाहकार संपादक, श्री महावीर सिंह रावत,** सहा० लेखाधिकारी–**सहायक संपादक एवं श्री सुशील देवली,** सहा० लेखाधिकारी–**सहायक संपादक**



सत्यमेव जयते

पुरुषोत्तम दास
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन एवं लेखा)

प्रधान संपादक की कलम से

हमारे लिए गौरव का विषय है कि ''हिमज्योति'' पत्रिका का छठा संस्करण अपने सुधी पाठकों के हाथों में समर्पित कर रहे हैं। राजभाषा हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास में पत्रिका ''हिमज्योति'' एक सहायक रूप में मार्ग प्रशस्त करेगी, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

भारत में विविध भाषायें व क्षेत्रीय बोलियां हैं यहां तक कि कई प्रान्तों की अपनी भाषाएं हैं। इन विभिन्न भाषाओं व बोलियों को समझना व बोलना सभी भारतीयों के लिए आसान नहीं हैं। हमारी भाषाएं व बोलियां अलग–अलग होने के बावजूद हमारी संस्कृति ने सदियों से हमें एक सूत्र में पिरोये रखा। स्वतंत्रता के बाद भारत को अपनी पहचान बनाए रखने के लिए अपनी सर्वमान्य एक भाषा की आवश्यकता महसूस हुई, जो हमारे संविधान ने 14 सितम्बर 1949 को हमें प्रदान की। राजभाषा हिन्दी को वह स्थान प्राप्त हुआ जिसकी वह अधिकारिणी थी। आज सूचना क्रान्ति के इस युग में हिन्दी जन सामान्य की भाषा बन चुकी है। यह हमारा संवैधानिक दायित्व बनता है कि हम अपने क्षेत्राधिकार में अधिक से अधिक हिन्दी को बढ़ावा दें, जिस प्रकार हमें खुद के भारतीय होने पर गर्व है ठीक उसी प्रकार हमें अपनी राजभाषा हिन्दी पर गर्व होना आवश्यक है।

मैं पत्रिका के सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों, रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रधान सम्पादक



सत्यमेव जयते

महेश कुमार बत्रा
उप महालेखाकार
(निधि)

संपादकीय

यह हिन्दी पत्रिका "हिमज्योति" का छठा संस्करण अपने सुधी पाठकों के कर कमलों में सौंपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। हमारे रचनाकारों ने अपने संवैधानिक कर्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते हुए राजभाषा हिन्दी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। यह हमारे रचनाकारों की सृजनात्मक सोच का परिणाम है कि पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में निरन्तर अग्रसर है।

भारत की पहचान उसकी विविधता में निहित है। यही विविधता हमारी अनेकता में एकता की एक मनोहारी माला पिरोती है। भारत की विविध भाषाओं में संविधान के अनुच्छेद 343 के अन्तर्गत हिन्दी को संघ की राजभाषा का सम्मानित दर्जा प्राप्त है। संविधान के अनुच्छेद 351 के अन्तर्गत हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में उत्तरोत्तर वृद्धि और उसका विकास करने का दायित्व भारत सरकार पर है। इसलिए यह हमारा संवैधानिक कर्तव्य है कि हम अपने कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। इस संबंध में हम भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा समय–समय जारी दिशा–निर्देशों का अनुपालन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

मैं अपने सहृदय पाठकों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। आपके सुझाव पत्रिका के निखार में प्रभावी रूप से सहायक सिद्ध होंगे। आपके सुझाव आमंत्रित हैं।

संपादक



कैम्पटी फॉल, मसूरी

छायाकारः श्री अविनाश रंजन, सहायक लेखाधिकारी

गत वर्ष प्रकाशित 'हिमज्योति' के छठें संस्करण के लिए हमें उत्साहवर्द्धक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं। प्राप्त प्रतिक्रियाओं में से कुछ का उल्लेख नीचे किया गया है, जो कि हमें 'हिमज्योति' के इस संस्करण के लिए और अधिक प्रयास करने और गुणवत्ता में सुधार हेतु प्रेरणा एवं विश्वास देती हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह अंक पूर्व की अपेक्षा और अधिक रूचिकर सिद्ध होगा तथा आप इस अंक के सम्बंध में अपने अमूल्य सुझाव/प्रतिक्रियाओं से हमें पूर्ववत् अवगत कराएंगे। आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिए पुरस्कार के समान है।

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका 'हिमज्योति' के 5 वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक बना है। पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ/कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। सुश्री बबीता द्वारा लिखित 'घर के दानव' और श्री गणेश प्रसाद द्वारा लिखित 'ब्रेकिंग न्यूज' सराहनीय है।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी प्रकोष्ठ)
महालेखाकार (लेखा परीक्षा) झारखण्ड का कार्यालय, राँची

महोदय,

आपकी पत्रिका हिमज्योति की एक प्रति प्राप्त हुई।

मुझे यह कहने का निर्देश हुआ है कि यह पत्रिका बहुत ही आकर्षक है। कहानियाँ व कविताएँ बहुत ही रोचक एवं सराहनीय हैं। आशा है भविष्य में यह और भी आकर्षक एवं सराहनीय होगी। पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी प्रकोष्ठ)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), कोलकाता

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी गृह पत्रिका हिमज्योति के पंचम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ तथा साजसज्जा काफी आकर्षक है। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ काफी रोचक, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय हैं। विशेषकर भास्करानन्द त्रिपाठी की' राजभाषा बनाम राष्ट्रभाषा', सुश्री रेखा की 'आर्थिक विकास बनाम प्राकृतिक आपदाएं' तथा दीपा पंवार की 'हिम्मत' सराहनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु संपादक मंडल को बधाइयाँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी प्रकोष्ठ)
भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग कार्यालय–प्रधान महालेखाकार
(सामान्य एवं समाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल, स्थानीय लेखा परीक्षा विभाग।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ''हिमज्योति'' के 5 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका की सभी रचनाएँ उत्कृष्ट व ज्ञानवर्धक है।

हिन्दी भाषा के सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र है।

शुभकामनाओं सहित।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी प्रकोष्ठ)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), छत्तीसगढ रायपुर

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु प्रकाशित पत्रिका ''हिमज्योति'' का पंचम अंक प्राप्त हुआ। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ रुचिकर एवं सराहनीय है। आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

वरिष्ठ लेखाधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), कर्नाटक

महोदय,

हिंदी गृह पत्रिका ''हिमज्योति'' के पंचम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। इस अंक में समाहित सभी रचनाएं, आलेख शिक्षाप्रद, नीतिपरक, ज्ञानवर्द्धनीय हैं विशेषकर श्री भास्करानंद त्रिपाठी की एक कर्मयोगी को श्रद्धांजलि, दीपा पंवार की आज की सशक्त महिलाएं, रेखा जी की आर्थिक विकास बनाम प्राकृतिक आपदाएं एवं श्री रामबीर सिंह जी की कविता जीवन चक्र अति सराहनीय है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सम्पादक मण्डल को हमारे कार्यालय की ओर से बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं स्वर्णिम भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), तमिलनाडु

महोदय,

प्रेषित गृह पत्रिका ''हिमज्योति'' की प्रति प्राप्त हुई।

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यन्त सुन्दर है साथ में अन्य छायाचित्रों ने पत्रिका को और भी अधिक सुन्दर और संग्रहणीय बना दिया है।

पत्रिका में समाहित समस्त रचनायें उच्च कोटी की है। विशेषकर श्री भास्करानन्द त्रिपाठी का लेख 'राजभाषा बनाम राष्ट्रभाषा', सुश्री रेखा का लेख आर्थिक विकास बनाम प्राकृतिक आपदाएं श्री प्रवीण कुमार मिश्रा का लेख सरकारी तंत्र में कम्प्यूटरीकरण एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, कविताओं में श्रद्धांजलि, हिम्मत, स्वार्थी विशेष प्रशंसनीय है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादन मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएं।

पर्यवेक्षक / हिन्दी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), मध्यप्रदेश

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ''हिमज्योति'' की प्राप्ति हुई। अतः आभार स्वीकार करें।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं रोचक, मौलिक, ज्ञानवर्द्धक एवं पठनीय हैं। ''उड़ान'' (सुश्री शिवाँगी), ''हिम्मत'' (सुश्री दीपा पंवार) तथा ''चलो परी अब घर चलें'' (श्री राकेश रंजन मिश्रा) रचनाएं विशेष रुप से प्रभावित करतीहै। पत्रिका की साज–सज्जा भी उत्तम है।

''हिमज्योति''' पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए 'सुगंध' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

लेखापरीक्षा अधिकारी
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), पंजाब

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र के साथ 'हिमज्योति' के पंचम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ साधुवाद।

'हिमज्योति' में छपे प्राकृतिक दृश्य मन को हरने वाली हैं। इसमें समाविष्ट सभी रचनाएं रोचक और ज्ञानवर्धक हैं। विशेषतः राजभाषा बनाम राष्ट्रभाषा, आज की सशक्त महिलाएं आदि लेख सराहनीय है। जीवन चक्र, श्रद्धांजलि, इंटरनेट आदि कविताएँ भावपूर्ण एवं समकालीन हैं।

'हिमज्योति' राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ कार्यालय के कर्मियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। 'हिमज्योति' के सफल प्रकाशन एवं सुंदर छपाई के लिए ''कुरिंजि'' परिवार आपको बधाई देती है तथा 'हिमज्योति' के अनवरत प्रकाशन एवं उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करती है।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), तमिलनाडू

महोदय,

आपकी पत्रिका 'हिमज्योति' की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का मुद्रण व कलेवर उत्कृष्ट श्रेणी का है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं राजभाषा हिंदी के प्रति आपके प्रयासों को सार्थक करती है। रचनाओं में विशेष रूचिकर रचनाएं लगीं– 'जीवन चक्र', ''खुशी'', ''इंटरनेट'', सूचना अनुरोध पत्रों का निस्तारण''। पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मंडल को बधाई एवं भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी प्रकोष्ठ)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), उत्तराखण्ड

महोदय,

हिंदी गृह पत्रिका 'हिमज्योति के 5 वाँ अंक की प्रतियां प्राप्त हुई, धन्यवाद। आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका हिमज्योति का पृष्ठ अत्यंत मोहक है, इसकी आंतरिक साज सज्जा और पृष्ठों की गुणवत्ता अच्छी है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा उन्नयन हेतु विभागका यह कार्य सराहनीय है। ''उडान'' श्रीमती शिवाँगी, ''आज की सशत्क महिलाएं'' एवं ''हिम्मत'' श्रीमती दीपा पवांर ''आर्थिक विकास बनाम प्राकृतिक आपदाएं'' श्रीमती रेखा, ''साधना'' श्री प्रवीन कुमार मिश्रा ''इंटरनेट'' श्री प्रशांत कुमार का आलेख सराहनीय है। पत्रिका का कलेवर एवं पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के सफल सम्पादन रचनाओं के चयन, संकलन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक तथा सम्पादकीय परिवार के सभी सदस्यों को बधाई और पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (बिल्स)
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (सा०व०सा०क्षे०ले०प०), कर्नाटक, बेंगलूरू

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका ''हिमज्योति'' के 5वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ, तथा कहानियाँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्री महावीर सिंह की कविता ''अन्नदाता'', सुश्री दीपा पंवार का लेख ''आज की सशक्त महिलाएं'' श्री प्रशांत जोशी की कविता ''स्वार्थी'', श्री भास्करानंद त्रिपाठी का लेख ''राजभाषा बनाम राष्ट्रभाषा'', सुशील देवली की गज़ल, सुश्री रेखा का लेख ''आर्थिक विकास बनाम प्राकृतिक आपदाएं'' श्री विनोद कुमार शर्मा का लेख ''सूचना अनुरोध पत्रों का निस्तारण'', श्री एस.एस.तोमर का लेख ''जौनसार बावर–एक संक्षिप्त परिचय'', सुश्री दीपा पंवार की कविता ''हिम्मत'' व ''खुशी'', श्री महावीर रावत का लेख ''व्याघ्रेश्वर का महत्व'', श्री रामबीर सिंह का संस्मरण ''अजब तेरी लीला गज़ब तेरी माया'' श्री प्रवीण कुमार मिश्रा का लेख ''सरकारी तंत्र में कम्प्यूटरीकरण–एक दी गयी उक्तियां सुंदर व ज्ञानवर्धक है।

रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्जवल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–।। महाराष्ट्र, नागपूर

"सच्ची प्रतिष्ठा और सम्मान के लिये संपत्ति की जरूरत नहीं, उसके लिये त्याग व सेवा काफी है।"

–प्रेमचंद

अनुक्रमणिका

विधा	रचना का नाम	रचनाकार (सर्व श्री / श्रीमती / सुश्री)	पृष्ठ सं०
कविता	वीर गान	अजय कुमार पाल	1
लेख	लाखामंडल – भ्रमण	एस.एस.तोमर	2
गज़ल	गजल	सुशील देवली	5
लेख	एक चलती–फिरती रंगीन दुनिया	दीपा पंवार	6
कविता	जन्म से पहले	दिनेश शर्मा	8
लेख	अलादीन का चिराग	बबीता	9
लेख	सेल्फ–किलर बनती सेल्फी	दीपा पंवार	11
कविता	पैगाम	संजीव जखमोला	14
लेख	जल और स्वास्थ्य	दिनेश कुमार	15
कविता	मां की दुआ	अजय कुमार	16
लेख	अनुरोधकर्ताओं को सूचनाः ध्यानार्थ बिन्दु	विनोद कुमार शर्मा	19
कविता	सीख	अमित कुमार	21
संस्मरण	कुछ ऐसे लोग भी होते हैं	ओम प्रकाश	22
कविता	बूढ़ा हो रहा आईना	संजीव जखमोला	25
लेख	कैरियर विकल्प के चयन से पहले	अनुज कुमार	26
लेख	ग्लोबल वॉर्मिंग	संजय अंतल	27
कविता	मानसून स्पेशल	सचिन सिंह	29
लेख	वृद्धाश्रम क्यों ?	दिनेश कुमार	30
कविता	संघर्ष	भारत शर्मा	32
लेख	सुरक्षित भविष्य के लिए उचित निवेश	एस.जे.राय चौधुरी	33
कविता	कर्म करो	अनिल राठौर	36
लेख	कोषागार / उपकोषागार में पेंशन भुगतान आदेश के निरीक्षण में विचारणीय बिन्दु	महावीर सिंह रावत	39
लेख	बाबा केदारनाथ की महिमा	बृजभूषण सेमवाल	44
कविता	कैसे मनाऊं	महावीर सिंह रावत	47
लेख	डाक बाबू की वापसी	भास्करानन्द त्रिपाठी	48
गज़ल	गज़ल	सुशील देवली	50
कविता	भक्त का भाव	प्रशांत जोशी	50

सूची	वर्ष 2015–16 शैक्षिक सत्र के दौरान हाईस्कूल इंटरमीडिएट परीक्षाओं में उच्च अंक प्राप्त करने वाले होनहार छात्रों का संक्षिप्त विवरण	पत्रिका प्रकोष्ठ	51
सूची	अंग्रेजी शब्दों के सरल तथा उपयुक्त हिन्दी शब्द	विनोद कुमार शर्मा	52
सूची	वर्ष 2015–16 दौरान उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रमाण–पत्र तथा नकद पुरस्कार पाने वाले अधिकारियों / कर्मचारियों का संक्षिप्त विवरण	प्रशासन–1	54
छायाचित्र	वर्ष 2015–16 के दौरान आयोजित हिन्दी सप्ताह की झलकियाँ	हिन्दी अनुभाग	55
छायाचित्र	भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक द्वारा कौलागढ़ स्थित निर्माणाधीन कार्यालय भवन का निरीक्षण	सामान्य प्रशासन अनुभाग	59
छायाचित्र	विदेशी प्रतिनिधियों हेतु आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम	वी.एल.सी. अनुभाग	60
छायाचित्र	वर्ष 2016 में आयोजित कार्यालय की विभिन्न गतिविधियां	सामान्य प्रशासन अनुभाग कल्याण अनुभाग, मनोरंजन क्लब, एवं हिन्दी अनुभाग	61

वीर गान



अजय कुमार पाल
लेखाकार

मैं रहूँ न रहूँ ये अलग बात है
सर्जना कर रहा हूँ तुम्हारे लिए।
पाँव बढ़ते रहें, दिल ये फौलाद हो
जीतने की लगन, मन में बस याद हो
वज्रता की लहर, इस हृदय पृष्ठ पर
शूरता की कथाओं का,संवाद हो
सत्यपथ पर डटा, शक्तिरथ पर चढ़ा
गर्जना कर रहा हूँ, तुम्हारे लिए।



मैं रहूँ न रहूँ ये अलग बात है
सर्जना कर रहा हूँ तुम्हारे लिए ।
रण में चीखें बढ़ीं, रोष भी बढ़ गया
चूमने को शिखर, वीर दल चढ़ गया
युद्ध में, रण का परचम लहरता सदा
कम्प से शत्रुदल बर्फ सा जम गया
शौर्य से, जीत से, हर्ष से, प्रीत से
साधना कर रहा हूँ तुम्हारे लिये।

मैं रहूँ न रहूँ ये अलग बात है
सर्जना कर रहा हूँ तुम्हारे लिए।
सूरमाओं की ये इक विकट जंग हो
युद्ध कौशल से भी शत्रुदल दंग हो
स्वर को गुंजित किये, जय–विजय गान का
हाथ में रण विजय का ध्वजादण्ड हो
शक्ति से, कर्म से, भक्ति से, धर्म से
प्रार्थना कर रहा हूँ तुम्हारे लिये।
मैं रहूँ न रहूँ ये अलग बात है
सर्जना कर रहा हूँ तुम्हारे लिए।

लाखामण्डल-भ्रमण



एस०एस० तोमर
वरिष्ठ लेखाकार

पर्यटन की दृष्टि से लाखामण्डल उत्तराखण्ड राज्य की एक ऐतिहासिक धरोहर है जो कि भारत वर्ष में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में काफी लोकप्रिय है। राजधानी देहरादून से लाखामण्डल की दूरी विकास नगर होते हुए लगभग 120 किलोमीटर है और मसूरी होते हुए यह दूरी लगभग 30 किलोमीटर कम पड़ती है। घढ़बैराट जो विराटखाई के नाम से प्रसिद्ध है, यहाँ राजा विराट का महल था। आज भी इस जगह पर महलों के अवशेष हैं। यह स्थान द्वापर युग में विराट नगर के नाम से भी प्रसिद्ध था। पाण्डवों ने अपने गुप्तवास का समय यहीं पर बिताया था, इसके यहाँ पर प्रमाण भी मिलते हैं। घढ़बैराट (विराटखाई) नामक स्थान राजधानी देहरादून से लगभग 100 किलोमीटर दूरस्थ स्थान नागताथ के निकट चकराता मोटर मार्ग पर स्थित है।

लाखामण्डल महाभारत काल से ही पौराणिक गाथाओं का महाभण्डार होने के कारण प्रसिद्ध है। यहाँ पर एक प्राचीन शिव मन्दिर स्थित है जिसे देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि शिव मन्दिर को बनाकर उल्टा रखा गया होगा या छत की ओर से चिनाई करके नीचे की ओर लाई गयी होगी। यह शिव मन्दिर राजकुमारी ईश्वरा ने अपने पति जालधर के पुत्र चन्द्रगुप्त की स्मृति में निर्माण करवाया था। मन्दिर वास्तुकला का अद्‌भुत नमूना है। इस मन्दिर के गर्भ ग्रह में ब्रह्मा, विष्णु, महेश, पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, यमराज की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। मन्दिर के ठीक सामने स्थापित शिवलिंग की गहराई के विषय में आज भी कोई ठीक प्रकार से नहीं बता पाता है। इसी के दाहिने तरफ हवन कुण्ड मौजूद है जिसमें पाण्डव पूजा–अर्चना करते थे। पौराणिक गाथाओं में इसके उल्लेख मिलते हैं। मन्दिर के दाहिने ओर जो चबूतरा सा बना हुआ है, उसमें पाँचों पाण्डवों को इस प्रकार स्थापित किया गया है कि चारों कोनों में भीम, अर्जुन, सहदेव, नकुल और बीच में स्वयं धर्मराज युधिष्ठिर शिवलिंग के रूप में विराजमान है।

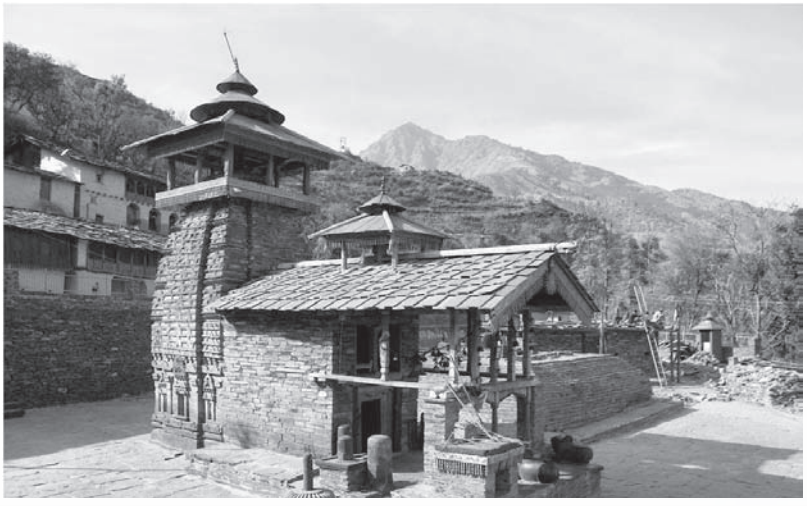


मान्यता है कि लाखामण्डल में स्थित शिवलिंग पर जो जल चढ़ाता है, वह उस पानी में अपना प्रतिबिंब साफ देख पाता है।

उत्तराखण्ड की देवभूमि पौराणिक गाथाओं को अपने आंचल में समेटे हुए है जो उत्तराखण्ड के लिए गौरवपूर्ण बात है कि देवों की इस पावन भूमि का उल्लेख महाभारत काल के अध्यायों में मिलता है। यदि पुराणों में मिलने वाले उल्लेखों का जिक्र करें, तो अनेक प्रकार की भ्रांतियाँ सामने आती हैं। जिस प्रकार लाखामण्डल में लाक्षागृह होने की पुष्टि होती है। लाखामण्डल नाम एक व्यापक क्षेत्र का बोधक है इस नाम के दो अर्थ लगाये जाते हैं– एक लाक्षामन्दिर व दूसरा लाखों के मन्दिरों से लाखामण्डल का नाम रखा गया है।

महाभारत काल से ही इसे वरूणावत नगर के नाम से जाना जाता था। वरूण पर्वत के एक तरफ यमुना तथा दूसरी तरफ गंगा निकलती है। वरूण पर्वत जिला उत्तरकाशी में पड़ता है और वरूण पर्वत से निकलने वाली नदी उत्तरकाशी के पास गंगा में संगम करती है। इसलिए इसका नाम वरूणावत के नाम से पड़ा होगा। इस पर्वत का वर्णन यहाँ की संस्कृति में भी आता है। यह नगर धृतराष्ट्र के शासन काल से ही उन्नत एवं समृद्धशाली था, जिसका वर्णन यहाँ की लोक गाथाओं में भी पाया जाता है और इसका साक्षात प्रमाण भी मिलता है।

यह एक ऋषि नगरी थी जहाँ शिवलिंगों का निर्माण होता था। यहाँ एक लाख से अधिक मूर्तियाँ व शिवलिंग बनाये गये थे। इस मन्दिर परिसर में एक ऐसी पटाल है जिस पर मुर्दा रख दिया जाता था और गंगा जल का छिटा मारने पर वह कुछ क्षण के लिए पुर्नजीवित हो उठता था और पुनः गंगा जल का छिटा मारने पर मूर्छित हो जाने पर ले जाते थे ऐसा सत्य युग में ही होता था, वर्तमान युग में नहीं।



मन्दिर के अतिरिक्त लाखामण्डल महाभारत काल से जुड़ा है, यह एक ऐतिहासिक गांव है।

इसी स्थान पर अज्ञातवास के समय में पाण्डव अपनी पत्नी द्रोपदी के साथ रहे। लाखामण्डल में पाण्डवों को मारने के लिए कौरव द्वारा षड्यंत्र के तहत लाक्षागृह का निर्माण करवाया गया था। महाभारत का सर्वत्र विद्वप अध्याय पाण्डवों को लाक्षागृह के अन्दर जलाकर मारने की योजना का था। दुर्योधन की हठ पर धृतराष्ट्र ने माता कुन्ती सहित पाण्डवों को इसी वरूणावत नगर में शिव पूजा के उत्सव पर लगने वाला वैशाखी (बिस्सू) मेला देखने भेजा था। इसमें पाण्डवों के स्थान पर अन्य लोगों ने भी अपनी जानें गंवाईं थीं। इस घटना का साक्षी भी उत्तराखण्ड रहा है। दुर्योधन द्वारा पाण्डवों के लिए तैयार कराया गया लाक्षागृह जौनसार बाबर के लाखामण्डल क्षेत्र में स्थित है। इस लाक्षागृह का निर्माण करवाने के लिए दुर्योधन ने अपने विश्वसनीय मन्त्री पुरोचन को भेजा था। पाण्डवों को उसी में जलाकर मारने की योजना बनाई गयी थी लेकिन दासी पुत्र विदुर की चतुराई से पाण्डवों को लाक्षागृह से सुरंग के मार्ग से होकर बचकर निकलने में कामयाब रहे। यह सुंरग लाखामण्डल से राजा घढ़बैराट (विराटखाई) व गौथान तक बनाई गयी थी ऐसा बताया जाता है। जिसके प्रमाण अभी भी देखने

को मिलते हैं। इसके अन्दर जाना सम्भव नहीं है। ये सदियों पुरानी द्वापर युग की बातें हैं। अब ये सुरंगें भर चुकी है। परन्तु सुरंगों के प्रवेश द्वारों के निशान अभी भी देखने को मिलते हैं। वनवास के समय पाण्डव भेष बदलकर राजा विराट के यहाँ रसोइये के रूप में काम करते थे। लाखामण्डल गाँव के निकट घौड़ा–मौड़ा नामक स्थान पर माता काली की भव्य व प्राचीन मूर्ति है जिसमें यहॉ के लोगों का अटूट विश्वास है और सभी लोग मन्नतें मांगते हैं। यहाँ आज भी माता को पशुओं की बली दी जाती है। लाखामण्डल में पाण्डव वाले कुछ एरिये में छोटे–छोटे हर पत्थरों पर मूर्तियों के चित्र व आकृतियाँ बनी हैं।

यह मन्दिर पुरातत्व विभाग की देख–रेख में है और खुदाई के दौरान जो मूर्तियाँ व शिवलिंग निकले हैं, उसको भारतीय पुरातत्व विभाग ने एक भवन में रख दिया है। लाखामण्डल के मन्दिर की देखभाल व रख–रखाव भारतीय पुरातत्व विभाग के अन्तर्गत है। मन्दिर के अतिरिक्त लाखामण्डल महाभारत काल से जुड़ा है। यह एक ऐतिहासिक गांव है। यहाँ प्रतिवर्ष समाजशास्त्र, मानव विज्ञान, इतिहास और पुरातत्व वैज्ञानिक तथा देश–विदेश के विद्वान अध्ययन तथा शोध के लिए आते हैं। उसके बावजूद यहाँ का विकास पूर्णतया नहीं हो पाया है और न ही आकर्षण का केन्द्र बन पाया है और न ही पुरातत्व विभाग की ओर से इसको आकर्षण का केन्द्र बनाया जा रहा है। जबकि समय–समय पर खुदाई होती रहती है और खुदाई के दौरान कुछ न कुछ मूर्तियाँ व शिवलिंग निकलते ही रहते हैं। उसमें से एक शिवलिंग की विशेषता यह है कि इस शिवलिंग पर जो व्यक्ति जल चढ़ाता है, वह अपना प्रतिबिम्ब साफ देख सकता है। जो सम्पूर्ण भारत में लगे शिवलिंगों में से एक है, ऐसा प्रतीत होता है। उत्तराखण्ड की देवभूमि पौराणिक गाथाओं को अपने आंचल में समेटे हुए है, जो उत्तराखण्ड के लिए गौरवपूर्ण बात है कि देवों की इस पावन भूमि का उल्लेख महाभारत काल के अध्यायों में मिलता है।

लाखामण्डल क्षेत्र यमुना नदी के किनारे बसा है, जिसके चारों ओर ऊँचे–ऊँचे पर्वत और घाटियाँ होने के कारण यहाँ वर्ष भर हरियाली ही रहती है। सर्दियों में यहाँ ऊँची–ऊँची चोटियाँ मार्च–अप्रैल तक बर्फ से ढकी रहती हैं। यहाँ का मौसम साफ रहने पर जब सूर्य की रोशनी इन ऊँचे–ऊँचे बर्फीले पर्वतों पर पड़ती है, तो उनकी तरफ देखना भी मुश्किल हो जाता है। यदि इसे संसार का स्वर्ग कहा जाय, तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। स्थान देववन, मुण्डाली, खडामा, लोखण्डी में चारों तरफ देवदार, बुरांस, बांज आदि के पेड़ हैं। जब इन पहाड़ों पर बर्फ गिरती है, तो वृक्ष भी बर्फ की सफेद चादर से ढके रहते हैं। जिससे मन प्रफुल्लित होने के साथ–साथ ऐसा लगता है कि मानों हम खुशियों के सागर में हिचकोले खा रहे हों। इसी कारण यह उत्तराखण्ड का स्वाभिमान है। इसलिए घूमने की दृष्टि से एक बार इस स्थान का भ्रमण अवश्य करना चाहिए।

ग़ज़ल



सुशील देवली
सहायक लेखाधिकारी

ये शहर मतलब परस्त क्या आपके जज्बात समझते हैं?
मेरे गाँव मेरे देहात आज भी मेरी हर बात समझते हैं

पुराने शहरों ने पढ़ाया था इल्मों अदब का सबक हमें,
शहर नौजवाँ इन बातों को पुराने ख्यालात़ समझते हैं

मखमली शहरों में टाट के पैबंद की तरह लगता हूँ
तभी तो यहाँ काहरेकरस्ता मेरी हैसियत मेरी औकात समझते हैं

जिसने गुरूबत के दिनों में गुरूबत देखी है रात दिन
वो ही शख्स ये अहसास ये हकीकत दिनोंरात समझते हैं

रिश्तेदारी ने हर अहसान का हिसाब मेरे जिम्मे जोड़ दिया
मैनें किस तरह निभाये हैं ये रिश्ते सब हालात समझते हैं

अदब–औ–आदाब के सबक लगता है इस जमाने में कहीं गुम हुए
किसी की इज्ज़त से खेलना आजकल तो ऊँची बात समझते हैं।

मौन सबसे सशक्त भाषण है। धीरे–धीरे दुनिया आपको सुनेगी।

–महात्मा गाँधी

एक चलती-फिरती रंगीन 'दुनिया'



दीपा पंवार
कनिष्ठ अनुवादक

लोगों से खचाखच भरा रेलवे स्टेशन। जहां तक नजर दौड़ाओ, लोग ही लोग। एक ट्रेन आती और लोग उसमें ऐसे समा जाते, जैसे कि प्यासी धरती पर गिरी बारिश की पहली बूंदें। चंद मिनटों में खचाखच भरा रेलवे स्टेशन खाली हो जाता। धीरे–धीरे फिर लोगों का हुजूम लगने लगता। इस हुजूम में कई अनजान चेहरे तय वक्त पर रोजाना दिखते। शायद इसीलिए, कुछ दिनों में, जाने–पहचाने से लगने लगे थे। नाम, पता पूछने की जरूरत कभी महसूस ही नहीं हुई। बस निगाहें मिलना ही काफी होता। बिना बात किए घर–परिवार की कहानी और ऑफिस की मसालेदार गपशप, सब पता चल जाती।

ट्रेन के अंदर लेडीज कोच में दाखिल होती, तो अलग–अलग रंग देखने को मिलते। एक स्टेशन पहले से ट्रेन में सवार, साथी महिलाओं के इंतजार में खिडकियों से झांक रहीं महिलाएं, इन्हें देखते ही जैसे खिल उठतीं। उनके आते ही हंसी–ठिठोली का दौर शुरू हो जाता। घर–परिवार की बातें, सुख–दुख और हंसी–खुशी की बातें, नौकरी और साग–सब्जी की बातों में कब अपना स्टेशन आ जाता, पता ही नहीं चलता। उधर, जनरल कोच का नजारा महिला कोच से थोड़ा हटकर रहता। वहां सीटों पर ताश के पत्ते बिछे होते और पुरुष खुद अखबार बिछाकर नीचे बैठे दिखते। हंसी–ठिठोलियां वहां भी थीं। भजन–कीर्तन करतीं पुरुषों की मंडलियां, राजनीति और खेलों पर आतीं एक के बाद एक राय, सहसा अहसास करा जातीं कि सब कुछ कितना खुशनुमा, कितना तनावमुक्त और कितना दोस्ताना है। ये दोस्त दवाओं का सा काम करते। इनका मिलना चेहरे पर ऐसी चमक पैदा करता कि सारी चिंताएं "सफर–भर" के लिए कहीं गुम हो जातीं। ट्रेन की दुनिया हमारी कथित दुनिया से अलग सी लगती।



लोकल ट्रेनों में समान बेचने वालीं महिलाओं का भी यात्रियों से अलग सा लगाव हो जाता है।

गाजियाबाद से नई दिल्ली तक का सफ़र करीब 3 साल तक मैंने लोकल ट्रेन से तय किया है। इस अनजानी, मीठी–मीठी सी खुशी को मैंने भी सफर के दौरान खूब महसूस किया है। लोकल ने हर रंग

दिखाया मुझे। दोस्तों के घुमक्कड़ी के प्लान से लेकर प्रेमी जोड़ों के प्यार और तकरार तक, राजनीति पर छिड़ी बहस से लेकर बॉसेज की नाराजगी तक, सास–ननद के तानों से लेकर बच्चों को लगाई डांट तक, लोगों के मिजाज से लेकर उनकी आदतों तक और अपनों के दर्द से लेकर परायों के प्यार तक। अब वह महज एक ट्रेन नहीं, बल्कि एक परिवार सी लगती। इस परिवार में सब मिलकर हर चीज साझा करते, सुख–दुख, हंसी–खुशी। अक्सर ट्रेन में चढ़ते–उतरते वक्त हादसे हो जाते, तो लोगों को मिलकर एक–दूसरे की मदद करते देखती। नौकरी मिलने या बच्चा होने की खुशी को एक दूसरे का मुंह मीठा कराकर बांटते देखती। खुद के लिए लाए फलों को सहयात्रियों के साथ बांटकर खाना, उनकी भूख को तो शांत करता ही, चेहरे की खुशी को भी दोगुना कर देता। नियमित यात्रियों को इन साथियों में अक्सर कुछ ऐसे अजीज मिल जाते, जो रिश्तों को दिलों से निभाने में यकीन करते।

यात्रियों से अलग एक और क्लास भी थी जिनके लिए ये ट्रेन और इसके यात्री खासा महत्व रखते थे। ये क्लास थी, ट्रेनों में सामान बेचने वालीं महिलाओं और पुरुषों की। उन्हें सबकी खबर रहती। कौन छुट्टी पर है, कौन किस वक्त पर...कौन सी ट्रेन लेता है या लेती है, किसकी शादी हो गई है, किसका बच्चा हुआ है, सब कुछ। उनसे भी एक अलग सा रिश्ता बन गया था।

पिछले दिनों, करीब 4 साल बाद, फिर लोकल ट्रेन से कुछ दिनों तक सफर करने का सुख मिला। पुरानी यादें तो ताजा हुईं ही, पुराने सहयात्रियों से मिलकर रोम–रोम प्रफुल्लित हो गया। महिला कोच में बरसों से सामान बेचने वाली एक बुजुर्ग महिला, जिनसे पुराने दिनों में काफी बातें होती थीं, से भी मिलना हुआ। खुशी हुई, जब उन्होंने 4 साल बाद भी मुझे एकदम पहचान लिया और हाल–चाल पूछा। उस दिन, लोकल से वापस घर की तरफ लौटते हुए यही ख्याल जहन में लेकर चल रही थी कि इस चलती–फिरती दुनिया में कितने अलग, कितने खुश और कितने तनावमुक्त होते हैं हम, जबकि बाहर अपनी कथित दुनिया में आते ही, न जाने वो "खुशी" कहां गुम हो जाती है।

संस्कृति मन और आत्मा का विस्तार है।

–पं० जवाहर लाल नेहरू

जन्म से पहले



दिनेश शर्मा
लेखाकार

सृजन की यात्रा के बारहवें सप्ताह में,
सूक्ष्म–निराकार–बिंदु अब स्पष्ट आकार धर रहा है।
हाड–माँस का वह निर्जीव–सा पिण्ड,
हृदय में तीव्र स्पंदन को अनुभूत कर रहा है।।

मुखमण्डल पर मानवी–सी,
एक सुन्दर आकृति उभर रही है।
और मस्तिष्क में बहते तरल में,
नितांत मानवीय उमंग उमड़ रही है।।

बाहर दुनिया में चल रहा प्रपंच,
और रचे जा रहे षड़यंत्र से बेखबर।
अपनी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त,
माँ की कोख में लेटी निडर।।



अकस्मात् माँ का स्वर गूँजा
'डॉक्टर साहब! ये क्या है'?
कुटिल मुस्कान के साथ उत्तर मिला
'इस बार भी बिटिया है'।।

उफ्फ! ये क्या,
एक तेज धारदार हथियार,
उस पिण्ड की ओर बढ़ रहा है।
और पिण्ड स्तब्ध होकर,
अंगों को सिकोड़े, आँखों को भींचे,
चीत्कार कर रहा है।।

वातावरण भय से आक्रान्त,
हाय!
शक्ति–स्वरूपा होकर भी,
आज इतनी निस्सहाय।।

सृष्टि की रचयिता होने का गौरव,
माँ से ना सम्भाला गया।
और आज फिर गर्भ में ही,
एक माँ को मार गिराया गया।।

अलादीन का चिराग



बबीता
लेखाकार

इटंरनेट, आधुनिक काल का अलादीन का चिराग हैं जहाँ एक क्लिक करते ही जिन्न की तरह सब कुछ आँखों के सामने हाजिर हो जाता है। आधुनिक काल में ये अलादीन का चिराग अधिकतम व्यक्तियों के पास है। सभी व्यक्ति अपनी सभी इच्छाओं को पूरा करते हैं। आज मुट्ठी में सारी दुनिया सिकुड़ गई है क्योंकि मोबाइल में भी इटंरनेट है। आज के समय में कोई भी व्यक्ति इस चिराग से वंचित नहीं है। यह आज के समय की मूलभूत आवश्यकता बन गई है। इसके बिना मानों जैसे जीवन की गति धीमी हो जाती है।



इटंरनेट वर्तमान समय में बहुत ही काम की चीज है, इसे नकारा नहीं जा सकता। परन्तु इससे अनेक विनाश के भी कार्य किये जा रहे हैं, इसे भी नकारा नहीं जा सकता। युवा और इटंरनेट वर्तमान में एक ही सिक्के के दो पहलू है–एक जो इस तकनीक का सही दिशा में प्रयोग करके देश की प्रगति में चार–चाँद लगाते हैं। देश का नाम पूरी दुनिया में रोशन करते हैं तथा सभी लोगों के जीवन को सरल बनाते हैं। दूसरा जो लोग इस तकनीक का गलत दिशा में प्रयोग करते हैं। वे देश की प्रगति को रोक देते हैं। दुनिया में देश का नाम बदनाम करते हैं तथा देश के मासूमों का जीवन तबाह कर देते हैं।

आज के इटंरनेट के आधुनिक युग में सभी वर्ग के लोग, चाहे वे बच्चे हों, बड़े हो या फिर बुजुर्ग हों, सभी विभिन्न सोशल साइटों से जुड़े हुए हैं। इन साइटों का प्रयोग रोजमर्रा के जीवन में कर रहे हैं। इन साइटों पर आज का युवा वर्ग अनेक असामाजिक विचारों को पोस्ट करते हैं जिससे अनेक विपरीत गतिविधियाँ जन्म ले लेती हैं और समाज में अशांति का वातावरण उत्पन्न हो जाता हैं। समाज में सभी वर्ग के व्यक्तियों का कर्तव्य है कि इन सोशल साइटों पर ऐसे विचारों को पोस्ट न करें तथा अनुचित, असभ्य गतिविधियों को न करें।

आधुनिक युग में स्मार्ट फोन मे इटंरनेट विशेष महत्व रखता हैं। आज स्मार्ट फोन में अनेक ऐसे एप्स उपलब्ध हैं। जैसे वाट्सएप्स, टेलीग्राम, मैसेनजर, इनस्टाग्राम, फेस बुक इत्यादि इन सभी एप्स के द्वारा व्यक्तियों के

जीवन में बड़ा बदलाव आया हैं। पुराने समय में लोग एक दूसरे को त्यौहारों, जन्मदिन इत्यादि अवसरों पर ही अपने मित्रों तथा सगे सम्बधियों को मुबारकबाद देते थे परन्तु आज बिना किसी अवसर के अपने मित्रों तथा सगे–सम्बधियों को बधाई संदेश, शुभकामनाएँ तथा विभिन्न क्षेत्रों के महापुरूषों के आदर्श और विचारों से एक–दूसरे को अवगत कराते हैं। सभी के जीवन में उन्हें अपनाने को प्रेरित करते हैं। जिससे जीवन में सकारात्मक ऊर्जा व उत्साह का सृजन होता है।

इन एप्स की उपयोगिता का ही परिणाम है जिसमें हम सभी दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से आमने–सामने देखकर बात कर सकते हैं, विशेष विषयों पर विचार–विमर्श कर सकते हैं। इतना ही नहीं बल्कि इससे अपने महत्वपूर्ण पेपर्स तथा डॉक्यूमेंट्स और फाईलों को कुछ ही सैकण्डों में कहीं भी भेज सकते हैं तथा मगँवा सकते हैं। जो पहले सिर्फ डाक द्वारा ही संभव था जिसमें बहुत अधिक समय तथा धन खर्च होता था। इन एप्स ने विश्व के बीच दूरियाँ खत्म कर दी है। इन एप्स की सहायता से समाज के व्यक्ति एक–दूसरे से जुड़ रहे हैं। इससे समाज में उच्च विचारों का आदान–प्रदान हो रहा है। जो एक अच्छे समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है।

''इसलिए हम कह सकते हैं कि स्मार्ट फोन अलादीन का चिराग है। इसके अन्दर इटंरनेट जिन्न हैं। जो हमारी इच्छाओं तथा आवश्यकताओं की पूर्ण रूप से पूर्ति करता है।''

मन में धीरज रखने से सब कुछ होता है। अगर कोई
माली किसी पेड़ को सौ घड़े पानी से सींचने लगे, तब
भी फल तो ऋतु आने पर ही लगेगा।

–सन्त कबीर

सेल्फ-किलर बनती सेल्फी



दीपा पंवार
कनिष्ठ अनुवादक

हर हाथ में चमकता स्मार्ट फोन और हर फोन में पल–पल में खिंचने वाली सेल्फी। सेल्फी भी ऐसी, जो आपको दूसरों से "अलग" और "दिलेर" दिखाए। लोग देखें, तो उनका मुंह खुला का खुला ही रह जाए। उसके बाद सोशल मीडिया पर आने वाले कमेंट्स और लाइक्स की बहार। आजकल सेल्फी का कुछ ऐसा ही नशा छाया है युवाओं पर। सेल्फी यानी मोबाइल या कैमरे से खुद खींची जाने वाली अपनी तस्वीर, जिसे बाद में सोशल मीडिया पर अपलोड किया जाता है। तस्वीर को "आकर्षक" और "अलग" बनाने के लिए ये युवा नए–नए जोखिम भरे आइडियाज आजमा रहे हैं। लेकिन अलग दिखने की इस होड़ में कब ये मौत से आंखें मिलाने की जुर्रत कर जाते हैं, इन्हें खुद भी पता नहीं चलता। जब तक पता चलता है, बहुत देर हो चुकी होती है। सेल्फी के चक्कर में जान गंवाने संबंधी आंकड़े हैरान करने वाले हैं। इनमें युवाओं की संख्या सबसे ज्यादा है।

पिछले दिनों प्रमुख अंग्रेजी दैनिक "द टाइम्स ऑफ इंडिया" ने वॉशिंगटन पोस्ट में छपी खबर के हवाले से लिखा था कि वर्ष 2015 में पूरी दुनिया में सेल्फी से हुई मौतों में भारत सबसे आगे था। रूस, अमेरिका और स्पेन इसके बाद आते हैं। दुनिया भर से लगातार ऐसे मामले आ रहे हैं, जब एक "उम्दा" सेल्फी के लिए लोगों ने अपनी जान की भी परवाह नहीं की और मौत का शिकार हो गए। विकीपीडिया पर सर्च करने पर इस संबंध में मार्च, 2014 से जुलाई 2016 तक के आंकड़े देखे जा सकते हैं। इनमें इटली की 16 साल की एक लड़की का जिक्र है, जो सेल्फी क्लिक करने के चक्कर में खाई में गिर पड़ी। पाकिस्तान के रावलपिण्डी में चलती ट्रेन के सामने सेल्फी लेने की कोशिश में एक 22 वर्षीय युवक की जान चली गई। मथुरा के कोसीकलां में भी 20 से 23 साल तक के 3 युवकों ने ऐसी ही सेल्फी लेने की कोशिश में ट्रेन के आगे आकर जान गवां दी। कजाकिस्तान में पर्वतों पर दो लोग एक हैंड ग्रेनेड का पिन निकालकर सेल्फी खींचने के चक्कर में मौत के मुंह में समा गए। फोन में रह गई उनकी



सेल्फी के चक्कर में जान गंवाने संबंधी आंकड़े हैरान करने वाले हैं। इनमें युवाओं की संख्या सबसे ज्यादा है।

तस्वीर ने पूरी कहानी बयां की। मुम्बई में 14 साल का एक स्कूली छात्र ट्रेन के ऊपर चढ़ सेल्फी लेने के चक्कर में करंट से झुलस गया। पठानकोट में 15 साल के एक किशोर ने अपने सिर पर भरी हुई बंदूक रखते हुए सेल्फी लेने की कोशिश की और मौत का शिकार हो गया। अमेरिका में सिसना 150 एयरप्लेन के एक पायलट ने सेल्फी के चक्कर में प्लेन पर से नियंत्रण खो दिया और अपनी व साथी यात्री की जान ले बैठा। रूस में 17 साल का एक लड़का नौ मंजिला इमारत से ऐसे लटक गया जैसे कि वह गिरने वाला हो। एक हाथ से लटकते हुए वह अपनी "अद्भुत" सेल्फी लेना चाहता था, लेकिन उसका हाथ फिसल गया और वह नीचे गिर गया। तमिलनाडू की एक दम्पती सेल्फी लेने के दौरान कन्याकुमारी में विशाल लहरों में बह गई। हादसों की फेहरिस्त बहुत लम्बी है।

आंकड़े बताते हैं कि सेल्फी खींचने वालों में महिलाओं की संख्या पुरुषों के मुकाबले अधिक है। परन्तु फरवरी 2016 में आए आंकड़ों में सेल्फी से मरने वालों में पुरुषों का प्रतिशत 75.5 है, जबकि महिलाओं का प्रतिशत 26.6। इसके अलावा, इनमें 20 से 21 साल के युवाओं का प्रतिशत 38 है, जो बाकी उम्र के लोगों से कहीं ज्यादा है। इनमें ऊंचाई से, पानी के पास से और ट्रेन ट्रैक पर सेल्फीज से ज्यादा मौतें हुई हैं।



पठानकोट में 15 साल के इसी किशोर ने अपने सिर पर भरी बंदूक रखते हुए सेल्फी लेने की कोशिश की और मौत का शिकार हो गया। (फाइल फोटो)

मौत के अलावा भी एक दूसरा पहलू है, जो मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों का ध्यान इस ओर खींच रहा है। दरअसल, पिछले दिनों फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन ने ट्विटर पर अपनी एक पोस्ट में इस बात पर गहरा दुःख जताया था कि कैसे उनके एक मित्र के अंतिम संस्कार के मौके पर लोग सेल्फी लेने में व्यस्त थे। एक अन्य मामले में एक पोते ने अपने दादा के मृत शरीर के साथ सेल्फी खींचकर उसे सोशल मीडिया पर डाला था। कई लोग आत्महत्या करने से तुरंत पहले सेल्फी कैमरे में कैद कर जाते हैं। बाद में परिजनों का उन तस्वीरों को देखना बेहद कष्टकारी होता है। इसके अलावा, जानवरों पर भी सेल्फी की यह सनक भारी पड़ रही है। अर्जेंटीना में समुद्र किनारे एक डोल्फिन को जबर्दस्ती कुछ लोगों ने किनारे पर खींच लिया और उसके साथ सेल्फी लेने की जैसे होड़ मच गई। ज्यादा देर पानी से बाहर रहने पर डोल्फिन को जान से हाथ धोना पड़ा। चीन के एक एनिमल पार्क में पर्यटकों ने दो मोरों को ललचाकर पहले पास बुलाया, फिर उन्हें अपनी ओर खींच लिया और जबर्दस्ती उनके साथ सेल्फी ली। पंखों को सहेजकर रखने के लिए उनके पंख भी खींचे गए। बेइंतहा दर्द और डर की वजह से दोनों मोरों ने दम तोड़ दिया। तकनीकी युग में हम पहले ही बहुत असंवेदनशील होते जा रहे हैं, सेल्फी इसमें इजाफा कर रही है।

अब बड़ा सवाल यह है कि सेल्फी का जादू आखिर क्यों इस कदर युवाओं को अपनी गिरफ्त में ले रहा है? इसका कारण पता लगाने में कई समाजशास्त्री और मनोवैज्ञानिक जुटे हैं। परन्तु अब तक इसका सही कारण पता नहीं चल सका है। कयास लगाए जा सकते हैं कि इसके पीछे शायद उनकी सोच यह है, कि भले ही मैं खास हूँ या न हूँ, लेकिन एक रोमांचक सेल्फी मुझे आकर्षण का केंद्र जरूर बना देगी। सोशल मीडिया में इसके जाने से लोगों को पता चलेगा कि मैं किस हद तक निडर, साहसी या श्रेष्ठ हूं।

इसके अलावा, पोस्ट पर आए लाइक्स उन्हें लोगों का प्यारा होने का भी एहसास कराते हैं। दूसरे लोगों की रोमांचक सेल्फी देखकर उसका हिस्सा बनने की ललक भी एक कारण हो सकता है।

बहरहाल, समाधान पर प्रकाश डालें, तो मुम्बई शहर से इस संबंध में सीख ली जा सकती है। मुम्बई ने अपने 16 इलाकों को "नो सेल्फी" जोन घोषित कर दिया है। इनमें पानी के पास, ऊंचाई से सेल्फी लेने पर सख्त मनाही है। रूस ने भी कुछ ऐसे ही कड़े दिशानिर्देश जारी किए हैं। इनमें ट्रेन ट्रैक पर, ऊंचाई पर, नदी किनारे, चलते वाहन से या प्लेन आदि से सेल्फी खींचने पर सख्त पाबंदी है। इसी तरह के नियम अन्य देशों तथा भारत के भी अन्य राज्यों व शहरों में लागू होने चाहिए, ताकि सेल्फी को "सेल्फ किलर" बनने से रोका जा सके।

लेकिन चूंकि नियम–कानून बनाना और उनका अनुपालन सुनिश्चित करना एक लम्बी और उबाऊ प्रक्रिया है, इस समस्या को सरकार के भरोसे छोड़कर हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठा जा सकता। अभिभावकों को चाहिए कि अपने बच्चों के इस शौक को पागलपन का रूप न लेने दें। उससे पहले ही जरूरी कदम उठाएं और भविष्य के लिए सजग रहें। सोशल मीडिया के जरिए भी उन पर नजर रखें। साथ ही दोस्तों और रिश्तेदारों को भी चाहिए कि यदि कोई जोखिम भरी सेल्फी सोशल मीडिया पर पोस्ट करे, तो लाइक करने के बजाय उसे इन सबसे दूर रहने की सलाह दें। समाज को भी ऐसी पोस्ट पर गहराई से विचार करते हुए प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

प्रसन्न रहना बहुत सरल है, लेकिन सरल
होना बहुत कठिन है।

–रविन्द्रनाथ टैगोर

पैगाम



संजीव जखमोला
वरिष्ठ लेखाकार

पैगाम मेरा है तुम सबको, जरा गौर फरमाओ।
ए दहशत फैलाने वालों, जरा होश में आओ।।
मंदिर, गुरुद्वारों में मुझको, तुम शीश नवाते हो।
मस्जिदों और चर्चों में, मेरे सजदे पढ़ने आते हो।।
ईश्वर अल्लाह यीशू नानक, सब मेरा ही साया है।
एक ही मिट्टी से बनी, हम सब की यह काया है।
समझो इबादत का मतलब, इन्सानियत को जानो तुम।
गौर से देखो तुम मुझको, और फर्क पहचानो तुम।।
हर जर्रे में, मैं हूँ, न मंदिर न मस्जिद में ढूँढ़ो मुझे।
हर पत्थर और खंजर में भी मैं, लहू की बूदँ और हर जख्म में भी मैं।
शवों की लपटों और कफन में भी मैं।।
तेरी हर तरक्की और, पतन में भी मैं।
तेरे घर की हर ईंट और उसके आगँन में भी मैं।
राम की तकलीफ, रहीम के क्रन्दन में भी मैं।।
जलती दुकानों, घरों के मातम में भी मैं।
तेरा खंजर चुभता मेरे ही सीने में, मेरा ही लहू बहता है।।
हैवान हो चला है तू, खूद को इंसान कहता है।
इन्सानों ने ही इस दुनिया में जब–जब लहू बहाया है।।
तब–तब खुद से पूछा मैंने क्यों मैंने तुम्हें बनाया है।
न बहाओ मेरा ही लहू, न किसी को इल्जाम दो।।
हैवानियत के इस मंज़र को अब न मज़हबी नाम दो।



जल और स्वास्थ्य



दिनेश कुमार
सहायक लेखाधिकारी

जल है, तो कल है। जल ही जीवन है। ऐसे वाक्य आपने बहुत पढ़े होंगे। वास्तव में, जल हमारे लिए एक बहुत ही आवश्यक पेय और औषधी है। प्राणियों का प्राण जल है और संसार भी जलमय है। जल न मिलने से मृत्यु भी हो सकती है। स्वस्थ या रोगियों का जीवन बिना जल के नहीं चल सकता। पानी शरीर की उष्णता को संतुलित रखता है तथा आवश्यक भोजन को शरीर के हर भाग में पहुँचाने के लिए रक्त के पतलेपन को बनाये रखता है और गन्दगी बाहर निकालने में सहायक होता है। यथासम्भव शुद्ध पानी पीना चाहिए और अगर पानी की शुद्धता में तनिक भी संदेह हो तो, शुद्धता के लिए उपाय करने चाहिए। यदि कुछ सम्भव न हो, तो पानी को उबाल कर ठंडा कर लेना चाहिए फिर उसका सेवन करना चाहिए।

खाने के साथ पानी नहीं पीना चाहिए। कुछ लोग यह पूछते हैं कि खाने के साथ जल को पीने से क्या हानि होती है? इससे पहली हानि यह होती है कि मुख की ग्रन्थियों का पाचक रस जो स्वयं निकल कर भोजन के साथ मिलता रहता है, पानी पीने से वह रुक जाता है। और यह पाचक रस भोजन के साथ न मिलने से भोजन के पचाने में देरी होती है तथा इसका प्रभाव अहितकर होता है तथा जो रस निकल कर भोजन के साथ मिल जाता है, वह भी अधिक पानी मिलने से निर्बल हो जाता है। देर से पचने के कारण खट्टी डकारें आती रहती हैं।

अन्य सुझाव –

1 पानी, खाना खाने से एक घण्टा पहले पीना चाहिए तथा फिर खाने के दो घण्टे बाद ही पीना चाहिए।

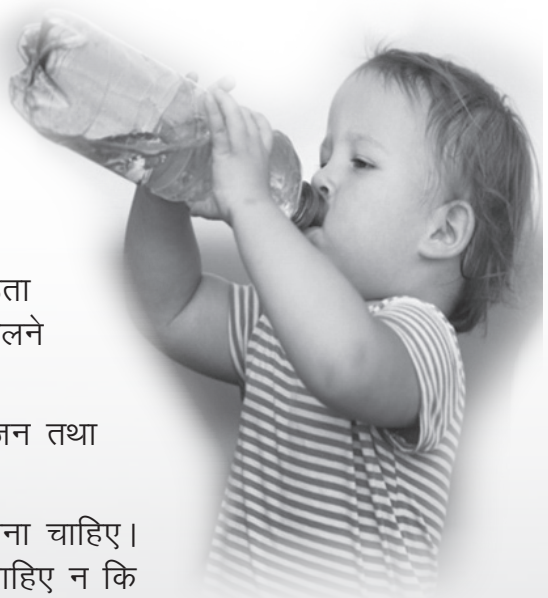
2 यदि एक गिलास गुनगुना पानी प्रातः निराहार पिया जाये तो पेट साफ रहता है।

3 पानी प्यास से भी अधिक नहीं पीना चाहिए अन्यथा भविष्य में अजीर्ण या जलोदर होने की सम्भावना हो जाती है।

4 अधिक पानी पीने से गुर्दों, आंतों एवं त्वचा पर असर पड़ता है। अतः अधिक पानी पीकर इन अवयवों पर पानी निकालने का भार अकारण नहीं डालना चाहिए।

5 ताजे फल और सब्जियों का रस निकाल कर पीना, भोजन तथा पानी दोनों का काम करता है।

6 स्वस्थ मनुष्यों को थोड़ा–थोड़ा, जल समय–समय पर पीना चाहिए। अगर जल की इच्छा हो तो, हो सके तो जल ही पीना चाहिए न कि अन्य पेय पदार्थ।



माँ की दुआ



अजय कुमार
डी0ई0ओ0

कुछ नया करने में लगा हूँ मैं
सोच कर यूँ जो उठा हूँ मैं,
इस जमाने पर अब नजर रखकर
फिक्र बस कल की कर रहा हूँ मैं।
लोग कहते हैं मेरे बारे में
भीड़ में सबसे ही जुदा हूँ मैं,
दोस्ती कौन करेगा मुझसे
इस शहर में नया हूँ मैं।



प्यार को उसने मेरे न समझा
उसकी नादानी से खफा हूँ मैं,
जिंदगी यह बहुत है तेरे लिए
दो कदम तो साथ चला हूँ मैं।
हो के नाकाम लौट आती है
एक टूटी हुई सदा हूँ मैं,
देखकर अब तो तुम भी खुश होगें
जो मुताबिक तेरे ढ़ला हूँ मैं।
कौन जानेगा अब मेरे गम को
हंस रहा हूँ कि रो रहा हूँ मैं,
हादसों से अजय कुमार डरना क्या
माँ के होठों की बस दुआ हूँ मैं।

श्रद्धा की कमी ही सारे कष्टों और दुखों की जड़ है।

–सुभाष चन्द्र बोस



श्री बद्रीनाथ मन्दिर

छायाकारः श्री महावीर सिंह रावत, सहायक लेखाधिकारी



सूर्यास्त, गांव कोल्हा, श्रीनगर पौड़ी गढ़वाल

छायाकारः श्री गणेश प्रसाद, सहायक लेखाधिकारी

अनुरोधकर्ताओं को सूचनाः ध्यानार्थ बिन्दु



विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी



सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के अन्तर्गत विभिन्न लोक प्राधिकारियों द्वारा भिन्न–भिन्न प्रारूप में अनुरोधकर्ताओं को सूचना प्रदान की जाती है। उल्लेखनीय है कि सूचना प्रदान करने का कोई निर्धारित प्रारूप नहीं है। अनुरोधकर्ताओं को सूचना प्रेषित करने हेतु प्रस्तावित उत्तर में प्रायः यह देखने में आता है कि उसमें कई आवश्यक सूचनाओं का उल्लेख नहीं किया गया है। अतः सूचना प्रदान करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उत्तर में निम्नलिखित सूचनाओं का समावेश किया गया है या नहीं :–

1. आर0 टी0 आई0 आवेदन सं0, दिनांक एवं लोक–प्राधिकारी को उसके प्राप्त होने की तिथि।
2. केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी का नाम, पदनाम, कार्यालय दूरभाष संख्या एवं ई0 मेल आई0 डी0।
3. यदि अनुरोध को अस्वीकार कर दिया गया है, तो सूचना का अधिकार अधिनियम की सुसंगत धाराओं का स्पष्ट उल्लेख करते हुए ऐसी अस्वीकृति का विस्तृत कारण।
4. यदि वांछित सूचना अन्य लोक प्राधिकारी से सम्बन्धित है एवं सूचना के अनुरोध–पत्र को अधिनियम की धारा 6(3) के अन्तर्गत अन्तरित किया गया है तो सम्बन्धित लोक प्राधिकारी का विवरण, जिसको अनुरोध–पत्र अन्तरित किया गया है, दिया जाना चाहिए।
5. उत्तर के समापन प्रस्तर में, यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाना चाहिए कि प्रथम अपील, यदि कोई हो तो, प्रथम अपीलीय प्राधिकारी को केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी से सूचना अथवा निर्णय प्राप्त होने के 30 दिन के भीतर की जा सकती है।
6. प्रथम अपीलीय प्राधिकारी का नाम, पदनाम, पता, कार्यालय दूरभाष संख्या एवं ई0 मेल आई0 डी0 का स्पष्ट उल्लेख किया जाना चाहिए।

उपरोक्त के अतिरिक्त जहाँ अनुरोधकर्ता द्वारा प्रमाणित प्रतिलिपि के लिए अनुरोध किया है, केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी को अपना नाम, पदनाम और दिनांक सहित हस्ताक्षर के साथ मुहर द्वारा प्रलेख/अभिलेख

को प्रमाणित करना चाहिए। मुहर के ऊपर ''प्रलेख/अभिलेख सूचना का अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत प्रदान किया गया'' (Documents/records supplied under RTI Act) उल्लेख किया जाना चाहिये।

यदि अनुरोधकर्ता को प्रदान करने हेतु प्रमाणित किये जाने वाले प्रलेख/अभिलेख अधिक संख्या में हैं तो सूचना के अनुरोध–पत्र के सम्बन्ध में वांछित सूचना केंद्रीय लोक सूचना अधिकारी के रूप में पदनामित अधिकारी द्वारा प्रदान की जानी चाहिए लेकिन प्रपत्रों का प्रमाणन, यदि आवश्यक हो तो, कनिष्ठ राजपत्रित अधिकारी द्वारा किया जा सकता है।

दुख तो मानने का है, मानो तो दुख का अंत नहीं है और मानो तो मौत भी सुखदायी है।

–विष्णु प्रभाकर

सीख



अमित कुमार
डी0ई0ओ0

हार कर बैठ जाना यह जिंदगी का अन्त नहीं।
ऐसा कौन–सा पतझड़ है, जिसका बसंत नहीं।
गहरे पानी में ही मिलता मोती है
हर पुरुष को उसकी भाग्य की चुनौती है।

चींटी बार–बार गिरती है और संभलती है।
हार के बाद ही अच्छी जिंदगी मिलती है।
हार का डर भी एक द्वार है।



भगवान ने गीता में कहा बार–बार है।
कर्म करना मानव का फर्ज है।
फल तो मात्र भगवान पर कर्ज है।
कोशिश करने में क्या हर्ज है।
लाइलाज न कोई मर्ज है।

नन्हें दीये भी कुछ देर टिमटिमाते हैं।
डूबता सूरज का कुछ देर फर्ज़ निभाते है।
उठो और मंजिल की ओर बढ़ो
कोई साथ न दे तो अकेले ही चलो।

लोग अपने अधिकारों को याद रखते हैं, परन्तु कर्तव्यों को भूल जाते हैं।।

–इन्दिरा गाँधी

कुछ ऐसे लोग भी होते हैं



ओम प्रकाश
वरिष्ठ लेखाधिकारी

एक बार बचपन में मुझे मेरे पड़ोस के मित्रों ने खेल ही खेल में पीट डाला, तब मैं बड़ा दुखी हुआ। रात को सोते समय मुझे दुखी देखकर मेरी दादी ने मेरे दुखी होने की वजह पूछी, तो मैंने दिन में हुई पिटाई के बारे में बता दिया । मेरी दादी ने मुझसे कहा कि सभी मित्र अच्छे नहीं होते और न ही सभी पड़ोसी ही अच्छे होते हैं। तब मेरी दादी ने मुझे एक कहानी सुनाई–

पुराने समय की बात है दो लोग आस–पास पड़ोस में अपने–अपने परिवारों के साथ रहा करते थे। उनमें से एक बहुत ही सज्जन था तथा दूसरा धूर्त किस्म का था। धूर्त किस्म का व्यक्ति आदतन चोर भी था। मेहनत करता नहीं था, दूसरों का सामान चुरा कर बेच देता था, और जबरन सामान भी छीन लिया करता था। एक शाम को उसने देखा कि एक व्यक्ति बगल में एक पोटली दबाये कुछ बड़बड़ाता चला आ रहा है। उनसे सोचा कि आज इस व्यक्ति को लूटा जाए शायद पोटली में कुछ माल हो। चोर ने पोटली छीन ली तथा देखा कि उस पोटली में एक डमरू है। उसने सोचा इस डमरू का क्या करूं कोई इसे खरीदेगा भी तो नहीं, जिससे कुछ पैसा मिल जाय। यह सोच कर वह उसे फेंकने लगा। तब उस लुटने वाले व्यक्ति ने उससे कहा, भाई इसे फेंक मत यह डमरू बड़े काम का है। इसे बजाते ही जो कुछ इससे मांगोगे तो वह मनचाही वस्तु तुरन्त तुम्हारे सामने हाजिर हो जायेगी। परन्तु इसमें एक कमी है तुम्हारे पड़ोसी के पास उससे दोगुनी वस्तु पहुंच जायेगी। चोर यह सुनकर खुश भी हुआ तथा पड़ोसी को दोगुना मिलने के ख्याल से दुखी भी हुआ तथा यह कहकर चल दिया कि देखा जायेगा।



घर पहुँच कर उसने उस डमरू को आजमाना चाहा तथा डमरू को बजाकर उससे अपने लिए अनाज की एक बोरी मांगी तथा अपनी पत्नी से कहा कि जा पड़ोसी के घर जाकर देखो कि उस व्यक्ति की बात में कितनी सच्चाई है। उसकी पत्नी जैसे ही घर से निकली तुरन्त एक बोरी अनाज की उसके सामने हाजिर हो गयी तथा उसकी पत्नी ने आकर कहा कि पड़ोसी के घर अनाज की दो बोरी पड़ी हैं। यह सुनकर वह बड़ा दुखी हुआ तथा कुछ सोचने लगा। कुछ देर सोचने के बाद उसने निर्णय लिया कि क्यों

न पहले पड़ोसी का कंटक काटा जाये, फिर डमरू से कुछ अपने लिए मांगा जाये। उसने डमरू बजाकर अपने लिए एक मकान की मांग की तथा पत्नी से फिर कहा जा देखकर आ। तब उसने देखा कि वह एक मंजिला मकान में था तथा उसकी पत्नी पड़ोसी के घर दो मंजिला मकान में अपने पड़ोसी के पास खड़ी थी। यह देखकर उसे दुख हुआ। उसे कुछ शैतानी सूझी कि उसने पुनः डमरू बजाकर मांगा कि मेरे घर के दरवाजे में एक गहरा कुंआ पैदा हो जाये तथा मेरा घर ढ़ह जाये तब उसे सोचा था कि पड़ोसी के घर के दोनों दरवाजों पर कुंए खुद जायेगें, तथा घर ढहने के डर से पड़ोसी बचकर भागना चाहेगा तथा दोनों पति एवं पत्नी कुंए में गिर कर मर जायेंगे तब मैं बेफिक्र होकर डमरू से मनचाही वस्तुऐं मांगूंगा। इस तरह की घटना से उसके पड़ोसी पति एवं पत्नी बडे आश्चर्यचकित थे तथा विस्मित होकर कुछ सोच रहे थे कि तभी उनके घर के दरवाजों पर कुंए पैदा हो गये तथा घर ढ़हने लगा। उनके भागने से पहले ही चोर की पत्नी जो उनके ही घर में थी वह भाग पड़ी तथा कुंए में गिर पड़ी तभी चोर ने फिर डमरू बजाकर मांगा कि मेरे घर का कुंआ पट जाये। तब उसके घर के साथ ही पड़ोसी के घर के दोनों दरवाजों के कुए भी पट गये तथा उसकी पत्नी जो कुंए में गिर गयी थी वहीं दब कर मर गयी, चोर ने सोचा था कि मैं तो घर के एक किनारे पर खड़ा हूँ घर ढ़हने से मैं बच जाऊंगा तथा पड़ोसी पति–पत्नी दब कर मर जायेंगे। तब उसने ध्यान नहीं दिया कि मेरी अपनी पत्नी भी पड़ोसी के घर में है तथा वह मेरी तरह सचेत नहीं होगी। जब कुछ देर तक उसकी पत्नी नहीं लौटी तो उसने पड़ोसी की तरफ जाकर देखा कि उसके घर के साथ ही पड़ोसी का घर व कुंए भी गायब हैं। पड़ोसी अपने दैनिक कार्य मजदूरी पर जाने की तैयारी कर रहा है परन्तु उसकी अपनी पत्नी कहीं नजर नहीं आ रही है। उसने अपने पड़ोसी से पूछा भाई मेरी पत्नी इधर आयी थी लौटी नहीं है, कहां गयी होगी। उसके पड़ोसी ने कहा भाई आज रात तो बड़ी अनहोनी घटना घटी है। मेरे घर में अनाज की बोरी आ पड़ी फिर एक घर बन गया फिर घर के दरवाजों पर कुएं खुद गये फिर जोर का भूकंप सा आया तथा घर ढ़ह गया तथा कुएं भी अपने आप पट गये तुम्हारी पत्नी कुछ देर तो हमारे पास खड़ी थी। हम अजीब सी बातें देख कर घर से निकल गये थे तथा बाहर रास्ते पर जाकर खड़े हो गये थे तुम्हारी पत्नी को हमने फिर नहीं देखा। चोर बड़ा दुखी हुआ तथा सोचा कि हो सकता है मेरी पत्नी ही दब कर मर गयी है। तब वह जंगल की ओर चल पड़ा जहां से उसे डमरू मिला था कुछ आगे चलने पर देखा कि वह व्यक्ति बैठा हुआ है जिससे उसने डमरू लूटा था। उसने आप बीती उसे सुनाई तो उस व्यक्ति ने कहा कि, यही गलती तो मैने भी की थी मैं भी अपनी पत्नी गंवा बैठा हूं। उन दोनों ने आह भरकर कहा कि किसी का बेवजह अहित नहीं करना चाहिए ईश्वर उपयुक्त फल भी दे देता है।

दादी ने कहा, ''इससे क्या समझ में आया'', तो मैंने कहा, उनके साथ बड़ा अच्छा हुआ। इस पर दादी ने कहा नहीं किसी का कोई अहित होने पर इस तरह खुश नहीं हुआ जाता है। इसका यह मतलब है कि अपने पड़ोसी से कभी बैर मत रखो। पड़ोसी सभी नाते रिश्तेदारों से ज्यादा नजदीक होता है। दुःख मुसीबत में वही सबसे पहले काम आता है क्योंकि वही तो सबसे ज्यादा पास में होता है। अच्छा पड़ोसी

ही सबसे बड़ा मित्र होता है, रिश्तेदार होता है, शुभचिन्तक होता है। यह सुनकर मैंने कहा, परन्तु दादी कहानी की तरह कुछ गन्दे पड़ोसी भी तो होते हैं। तब दादी ने कहा, हां कुछ ऐसे लोग भी होते हैं।

यह कहानी मेरी दादी ने मुझे सुनाई थी हो सकता है उन्हें उनकी दादी ने सुनाई हो। मैं इस रचना की मौलिकता के बारे में यही कह सकता हूँ। काश ! ऐसी दादी सबको मिले।

"वास्तव में इन्सान जो कुछ किसी में देखता है, यह वह नहीं होता
जो वह देख रहा होता है, यह वह होता है जो वह देखना चाहता है।"

–अमृता प्रीतम

बूढ़ा हो रहा आईना



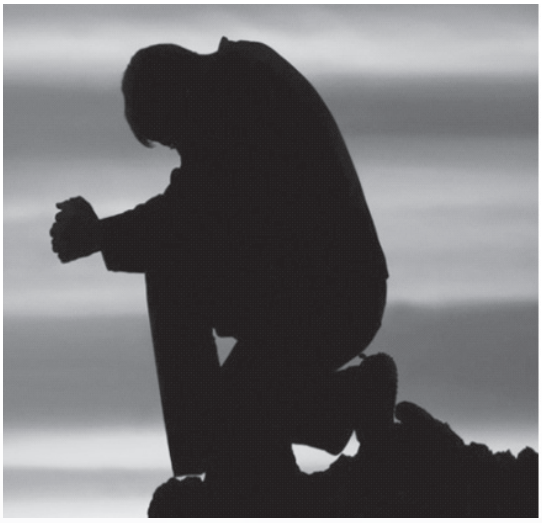
संजीव जखमोला
वरिष्ठ लेखाकार

जो दिखाता है सबको चेहराए उसके मन का राज है गहरा।
फरेबी हाथों में सज कर, सबको दिखाया जा रहा आईना।।

धुंधली सूरतें बिगड़े चेहरे, फिर भी मुस्कुरा रहा आईना।
जीवन भी इस दौड़ धूप में, अपनी पहचान गवाँ रहा आईना।।

चहेरों पर चढ़ते जा रहे चेहरे, देख हैरान हो रहा आईना।
गहरे चेहरों के रंगो को, एकटक निहारे जा रहा आईना।।

कुछ चेहरों के भावों को पढ़कर, अपनी पहचान बचा रहा आईना।
कश्मकश भरे जीवन में, देख बूढ़ा होता जा रहा आईना।।



एकमात्र ईश्वर, आत्मा और आध्यात्मिकता ही सत्य है,
शक्ति है, शक्ति–स्वरूप है। केवल उन्हीं का आश्रय लो।

–स्वामी विवेकानन्द

कैरियर विकल्प के चयन से पहले



अनुज कुमार
लेखाकार

हमारा भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम कैसे कैरियर विकल्प को चुनाव करते हैं। इसलिए ऐसा फैसला बेहद गम्भीरता से लेना चाहिए। वैसे आज लगभग प्रत्येक क्षेत्र में अवसर उपलब्ध हैं पर अपनी रुचि और योग्यता पर खास ध्यान देना जरूरी है। ऐसी स्थिति में ही तरक्की की सम्भावना और बलवती होती है।

कृपया इन बातों पर ध्यान दें:–

- सबसे पहले अपनी रुचि का ध्यान रखें। जिस क्षेत्र में आपको दिलचस्पी हो, उसी का चयन करें। साथ ही उस फील्ड में अपनी योग्यता का भी आंकलन करें।
- कैरियर के चयन में कोई भी जानकारी आप विश्वस्त सूत्रों से ही लें। रिश्तेदारों या पड़ोसियों की बातों पर आंख मूंदकर विश्वास न करें।
- इन्टनेट के आज के युग में तमाम जानकारियां बेबसाइट के माध्यम से भी प्राप्त की जा सकती हैं। कौन–सा विषय हॉट है? किस फील्ड में जॉब के मौके अधिक होंगे? ऐसे तमाम सवालों पर विचार करके ही कदम आगे बढायें।



- पैसा जरूरी है, पर सब कुछ नहीं। इसलिए सिर्फ यह सोचकर कोई विषय न चुन लें कि इससे काफी कमाई है। खुद की संतुष्टि भी अत्यन्त जरूरी है। जब आप रिलेक्स रहेगें और अपने काम को एन्जॉय करेंगे, तभी तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ते जायेंगे।

ग्लोबल वॉर्मिंग



संजय अन्तल
डी0ई0ओ0

ग्लोबल वॉर्मिंग दुनिया के लिए कितनी बड़ी समस्या है, ये बात एक आम आदमी समझ नहीं पाता है। उसे ये शब्द थोड़ा 'टेक्निकल' लगता है इसलिए वो इसकी तह तक नहीं जाता है। लिहाजा इसे एक वैज्ञानिक परिभाषा मानकर छोड़ दिया जाता है। ज्यादातर लोगों को लगता है कि यह एक दूर की कौड़ी है और फिलहाल संसार को इससे कोई खतरा नहीं है। कई लोग इस शब्द को पिछले दशक से ज्यादा सुन रहे हैं इसलिए उन्हें ये बासी लगने लगा है।

भारत में भी ग्लोबल वॉर्मिंग एक प्रचलित शब्द नहीं है और भाग–दौड़ में लगे रहने वाले भारतीयों के लिए भी इसका अधिक कोई मतलब नहीं है। लेकिन विज्ञान की दुनिया की बात करें, तो ग्लोबल वॉर्मिंग को लेकर भविष्यवाणियाँ की जा रही हैं। इसको 21वीं शताब्दी का सबसे बड़ा खतरा बताया जा रहा है। यह खतरा तृतीय विश्व युद्ध या किसी क्षुद्रग्रह (एस्टेरोइड) के पृथ्वी से टकराने से भी बड़ा माना जा रहा है।



ये हुई कुछ ऊपरी बातें, जो ग्लोबल वॉर्मिंग को लेकर कही गईं लेकिन अगर हम इसकी तह में जाएँ तो हमें पता चलेगा कि वाकई यह विषय बहुत महत्वपूर्ण है। पूरी दुनिया इससे प्रभावित हो रही है। अगर इसे नहीं संभाला गया, तो यह किसी विश्वयुद्ध से ज्यादा जान–माल की हानि कर सकता है। सबसे पहले हमें इसकी कुछ शुरुआती बातें समझनी होंगी।

वैज्ञानिकों के अनुसार ग्रीन हाउस गैस वो होती हैं जो पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश तो कर जाती हैं लेकिन फिर वो यहाँ से वापस 'स्पेस' में नहीं जाती और यहाँ का तापमान बढ़ाने में कारक बनती हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार इन गैसों का उत्सर्जन अगर इसी प्रकार चलता रहा तो 21वीं शताब्दी में पृथ्वी का तापमान 3 से 8 डिग्री तक बढ़ सकता है। अगर ऐसा हुआ, तो इसके परिणाम बहुत घातक होंगे।

माना जाता है कि पिछली शताब्दी में यानी सन् 1900 से 2000 तक पृथ्वी का औसत तापमान 1 डिग्री फैरेनहाइट बढ़ गया है। सन 1970 के मुकाबले वर्तमान में पृथ्वी 3 गुणा तेजी से गर्म हो रही है। इस बढ़ती वैश्विक गर्मी के पीछे मुख्य रूप से मानव ही है। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन, गाड़ियों से निकलने वाला धुँआ और जंगलों में लगने वाली आग इसकी मुख्य वजह है। इसके अलावा घरों में लग्जरी वस्तुएँ मसलन एयरकंडीशनर, रेफ्रिजरेटर, ओवन आदि भी गर्मी को बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

बिजली संयंत्रों को बिजली पैदा करने के लिए भारी मात्रा में जीवाश्म ईंधन (मसलन कोयला) का उपयोग करना पड़ता है। इससे भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड पैदा होती है। माना जाता है कि संसार में 20 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड गाड़ियों में लगे गैसोलीन इंजन की वजह से उत्सर्जित होती है। इसके अलावा, विकसित देशों के घर किसी भी कार या ट्रक से ज्यादा कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित करते हैं। इनको बनाने में कार्बन डाइऑक्साइड की बहुत मात्रा उत्सर्जित होती है। इसके अलावा, इन घरों में लगने वाले उपकरण भी इन गैसों का उत्सर्जन करते हैं।

दुनिया के कई हिस्सों में बिछी बर्फ की चादरें पिघल रही हैं। समुद्र का जल स्तर कई फिट ऊपर तक बढ़ रहा है। समुद्र के इस बर्ताव से दुनिया के कई हिस्से जलमग्न हो जाएँगे। भारी तबाही मचेगी। यह तबाही किसी विश्वयुद्ध या किसी 'एस्टेरोइड' के पृथ्वी से टकराने के बाद होने वाली तबाही से भी बढ़कर होगी। हमारे ग्रह पृथ्वी के लिए वो दिन बहुत बुरे साबित होंगे।



पिछले काफी वर्षों से मौसम में काफी बदलाव आ गया है। गर्मियों में गर्मी नहीं होती, सर्दियों में सर्दी नहीं होती और बारिश में बारिश नहीं होती है। इस वजह से हमारे देश में खाद्य सामग्री कि काफी कमी हो रही है। फसलें अच्छी नहीं हो रही हैं। किसानों को काफी नुकसान हो रहा है। हमें अपनी दिनचर्या में बदलाव करने होंगे। हमें घरों में उपलों की जगह एलपीजी गैस का प्रयोग करना चाहिए। हमें खुद और अपने परिवार के लोगों को पैदल चलने की आदत डालनी चाहिए। हमें पर्यावरण के नजदीक रहना होगा और ज्यादा से ज्यादा प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करना चाहिए।

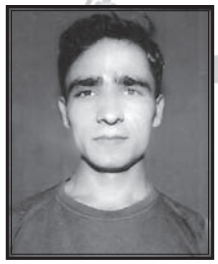
याद रखें कि बूँद–बूँद से ही घड़ा भरता है। अगर हम ये सोचें कि अकेले हमारे सुधरने से क्या हो जाएगा? तो इस बात को ध्यान रखें कि हम सुधरेंगे, तो जग सुधरेगा। सभी लोग अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करें, तो ग्लोबल वॉर्मिंग को भी परास्त किया जा सकता है। ये एक ऐसा राक्षस है जो जब तक सो रहा है, हम सुरक्षित हैं, लेकिन अगर यह जाग गया तो हमें कहीं का नहीं छोड़ेगा।

हमें ध्यान रखना होगा कि हम प्रकृति को इतना नाराज न कर दें कि वह हमारे अस्तित्व को खत्म करने पर ही आमादा हो जाए। हमें उसे मनाकर रखना पड़ेगा। हमें उसका ख्याल रखना पड़ेगा, तभी तो वह हमारा ख्याल रखेगी।

आस्था वो पक्षी है जो सुबह अंधेरा होने पर भी उजाले
को महसूस करती है।

–रविन्द्रनाथ टैगोर

मानसून स्पेशल



सचिन सिंह
डी0ई0ओ0

मानसून आयो, म्हारे देश!
म्हारे घर, द्वार!
खेत्ता और खलिहान!
अब लहरायेगी, इक्खां,
ज्वार, धान अपरंपार!
घर भरे, खेत भरे,
भरी सब गलियां,
जहां बच्चों ने खूब कीं बचपने वाली
अठखेलियां!
म्हारे खेत्ता में दिखेगा, अब चारों ओर,
हरा सोना,
टर्र–टर्र की मनमोहक संगीत,
से सजेगी अपनी रत्ता!
महक उठेगी, अब भिनी–भिनी सुगंध से
अपनी ये धरा,
फिर होगा, अपने कर्मशील का सपना साकार,
फिर बुने जायेंगे नित नये सपने अपार,
क्योंकि म्हारे देश आया मानसून ले के
मोतियों की बौछार।
मानसून को देखकर, इस नाचीज़ के मन में
जागा विचारों का सैलाब!



वृद्धाश्रम क्यों?



दिनेश कुमार
सहायक लेखाधिकारी

हमारे विचारक, धर्माचार्य एवं धर्मशा़स्त्र युवा पीढ़ी को माता–पिता की सेवा करने के संस्कार देते थे, किन्तु संस्कार–हीनता के कारण आज की युवा पीढ़ी माता–पिता की उपेक्षा ही नहीं अपितु उत्पीड़न भी करती है। इसी संस्कार हीनता के कारण भारतीय विरासत संयुक्त–परिवार टूट कर बिखर रहे हैं। यहाँ कभी वृद्ध माता–पिता का सम्मान किया जाता था, सेवा की जाती थी। लेकिन आज हम उन्हें ही भार समझ रहे हैं और वृद्धाश्रम की ओर देख रहे हैं। किसी विचारशील ने कहा है कि

"वह परिवार ही क्या जहाँ वृद्ध माँ–बाप की सेवा न की जाती हो, और वह सभा ही क्या जहाँ वृद्ध जन उपस्थित न हों।

हमारा वृद्धाश्रम की ओर देखना हमारी संस्कारहीनता का परिचायक है।"



जब हम वृद्धाश्रम की कल्पना करते हैं, तो हृदय कितना दुखी होता है, कि कहां तो माता–पिता का सम्मान देवी–देवताओं की तरह होता था, कहां उन्हें हम वृद्धाश्रम में छोडने की बात करते हैं। हमारे धर्मशास़्त्रों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं कि जिन्होंने मां–बाप की सेवा और आज्ञापालन के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। पुरुषोत्तम राम ने पिता की आज्ञा का पालन कर वन में जा कर एक अनूठा आदर्श उपस्थित किया। श्रवण कुमार ने अपने अन्धे माता–पिता की इच्छापूर्ति के लिए उन्हें कांवड में बैठा कर तीर्थ यात्रा करायी। मनु–स्मृति में स्पष्ट लिखा है कि जो वृद्धों का अभिवादन करता है, उनकी सेवा करता है उनकी आयु, विद्या, यश व शक्ति में वृद्धि होती है।

विदेशों मे भारत की संस्कृति की सराहना की जाती है, लेकिन आज हम अपनी संस्कृति को छोड़ पाश्चात्य संस्कृति के आवरण में लिपटने का प्रयास कर रहे हैं जो भारतीय संस्कृति के विरूद्ध है।

एक पिता अपनी सीमित आय में से कटौती कर ऋण लेकर अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाकर उन्हें योग्य बनाता है। किसलिये? कि उसका बुढ़ापा सुख–चैन से कटे। लेकिन बुढ़ापे में कई बेटों में से

कोई सा बेटा भी माता–पिता को रखने को तैयार नहीं होता। बूढ़े माँ–बाप उन्हें बोझ दिखायी देते हैं। वृद्ध माता–पिता जिन्होंने अपना सुख–चैन खोकर न जाने क्या–क्या सपने संजोये थे, आज वे परेशान हैं। शायद सभी बहुएं दुर्योधन जैसे पुत्र की अपेक्षा श्रवण जैसे पुत्र की कामना करती हैं, लेकिन वे श्रवण जैसे पति की कामना क्यों नहीं करती हैं। यदि वे चाहे कि मेरा पति श्रवण जैसा हो, फिर ये गृहस्थ स्वर्ग बन जाऐ। लेकिन उन पर तो पाश्चात्य सभ्यता इस प्रकार हावी हो चुकी है कि वे सास ससुर की उचित तर्क संगत बातों को अनुचित हस्तक्षेप कह कर विद्रोह पर उतर कर, ऐसी विषम परिस्थिति उत्पन्न कर देती हैं कि बेचारे सास–ससुर को परिवार से अलग हो जाने को बाध्य होना पड़ता है। बस, यहीं से शुरू हो जाती है वृद्धाश्रम की नींव। यदि युवा पीढ़ी अपना दृष्टिकोण बदल दे, तो इस नींव पर कभी इमारत खड़ी नहीं होगी।

भारतीय संस्कृति को ध्यान में रखते हुए ऐसे भटकें युवाओं को जो वृद्धों का तिरस्कार करते हैं उनसे पूछे कि वृद्धाश्रम क्यों? और उन्हें बतायें कि कुछ समय उपरान्त यदि वृद्धाश्रम आपके समक्ष होगा, तब सोचो आपका क्या होगा?

कर्म करना बहुत अच्छा है, पर वह विचारों से आता है...
इसलिए अपने मस्तिष्क को उत्तम विचारों और उच्चतम
आर्दशों से भर लो उन्हें रात–दिन अपने सामने रखो
उन्हीं में से महान कार्यो का जन्म होगा।

–स्वामी विवेकानन्द

संघर्ष



भारत शर्मा
लेखाकार

मैं अक्ल के घोड़े दौड़ाता रहा।
वक्त मुझे नया पाठ पढ़ाता रहा.....।
न रहा तन्हा तुझसे बिछुड़के भी.....
बस दर्द रह–रह कर आता और जाता रहा....।
मैं अक्ल.....
हर मुश्किल आसान है जिद के आगे
मैं टूटा मगर दिल को समझाता रहा
मैं अक्ल.....
बनता गया "फौलाद" हर "नाकामी" के बाद
मैं खुद के इरादे को "शिद्दत" से चाहता रहा.....
मैं अक्ल.....



शहादत कुछ खत्म नहीं करती, वह तो महज शुरुआत है।

–इन्दिरा गाँधी

सुरक्षित भविष्य के लिये उचित निवेश



एस०जे० राय चौधरी
वरिष्ठ लेखाकार



महाराज ने सैनिक की बहादुरी से खुश हो कर कहा "जो मन चाहे मांग लो"। सैनिक ने घबराते हुए विनम्रतापूर्वक बोला "हुजूर, मैं ठहरा गरीब आदमी, जो मिलता है उसी में खुश हूँ, परन्तु आपके आदेश कि अवहेलना नहीं कर सकता। अतः मैं आपसे यह मांगता हूँ कि आज एक पैसे से शुरू कर के अगले 180 दिनों तक हर रोज मुझे पिछले रोज से दुगने पैसे दिए जाये। जैसे कि, आज एक पैसा, कल 2 पैसे, फिर अगले दिन 4 पैसे, फिर 8 पैसे और इसी तरह से 180 दिनों तक। महाराज मन ही मन सैनिक के नुमायान मूर्खता पर खुश हुए। बूढ़े प्रधानमंत्री कलम–दवात लेकर कुछ हिसाब करने में खोये हुए थे। अचानक बोले "महाराज, इस धूर्त की बातों में मत आइये..."। महाराज ने ठहाका लगाकर बीच में ही कहा "प्रधानमंत्री जी, आप बूढ़े हो गए हैं। मैं आपका त्याग–पत्र स्वीकार करता हूँ" तथा वित्त मंत्री को निर्देशित किया कि सैनिक को अगले 180 दिनों तक, आज एक पैसे से शुरू करके, हर रोज पिछले रोज से दुगने पैसे दिए जाये।

180 दिनों के पश्चात् रू सैकड़ों सैनिक राजकोष में 766, 247, 770, 432, 944, 429, 179, 173, 513, 575, 154, 591, 809, 369, 561, 091, 801, 088 पैसे (766, 247, 770, 432, 944, 429, 179, 173, 513, 575, 154, 591, 809, 369, 561, 091, 8010 रुपये) गिनने में तैनात हैं तथा सैकड़ो सैनिक उन पैसों को बोरियों में भर कर गाड़ियों में लाद रहे हैं। महाराज माथे पर हाथ रख कर रो रहे हैं। सारा राजकोष खाली हो गया है।

उपर्युक्त उदाहरण पॉवर ऑफ कोम्पौन्डिंग का दृष्टान्त है जो दुनिया के आठवें आश्चर्य के नाम से जाना गया है। निवेश करते समय ध्यान रखें कि समय आपका सबसे अजीज मित्र है। पॉवर ऑफ कोम्पौन्डिंग को काम करने के लिए समय की आवश्यकता सर्वाधिक है। इस विषय पर हम बाद में चर्चा करेंगे।

निवेश करते समय कुछ ध्यान रखने योग्य बातें :

1. सर्वप्रथम अपने नेट–वर्थ को जानें। आपकी आमदनी कितनी है तथा आपके व्यय कितने है, इसका आंकलन करें। भविष्य में आपके आमदनी तथा व्यय में कितनी बढ़ोतरी की उम्मीद है, इसका भी आंकलन करें। इसके पश्चात् अपनी देनदारी का भी मूल्यांकन करें। भविष्य में कोई अपेक्षित व्यय का भी अनुमान करें। तत्पश्चात अपने कुल मासिक बचत का अनुमान करें।

2. मुद्रास्फीति निवेश के लिए घातक होता है। यदि मुद्रास्फीति की दर आपके निवेश के प्रत्याय दर (रेट ऑफ रिटर्न) से अधिक है, तो वह आपके निवेश को घुन की तरह चाट जायेगा तथा आपके नेट–वर्थ को अपक्षरण (एरोड) कर देगा।

3. आप कितने भी सावधान क्यों न हों, कोई अप्रत्याशित दुर्घटना आपके वित्तीय संसाधनों को भारी क्षति पंहुचा सकती है। ऐसी अप्रत्याशित दुर्घटनाओं से निपटने के लिए जीवन बीमा (लाइफ इंश्योरेंस) तथा स्वास्थ्य बीमा (हेल्थ इंश्योरेंस) अपने आप को तथा अपने आश्रितों को पर्याप्त रूप से वित्तीय सुरक्षा प्रदान कर सकता है। अपनी आवश्यकता के अनुसार पर्याप्त जीवन बीमा तथा स्वास्थ्य बीमा का चयन करना अति आवश्यक है।

4. निवेश के साथ बीमा का मिश्रण न करें। यह एक साधारण भूल है। यूनिट लिंक्ड बीमा योजना या एक पारंपरिक बीमा योजना आपको पर्याप्त सुरक्षा नहीं प्रदान करते। टर्म बीमा योजना एक बेहतर विकल्प है। साथ में एक स्वास्थ्य बीमा का होना भी आवश्यक है।

5. पॉवर ऑफ कोम्पौन्डिंग : यदि आप हर महीने रु० 10,000 (दस हजार) निवेश करते हैं तथा आपको 20 प्रतिशत का सालाना चक्रवृद्धि ब्याज मिलता है तो 10 वर्षों में आप की जमा राशि 12 लाख रूपये होगी तथा आपको मिला हुआ रिटर्न्स होगा लगभग रुपये 12,43,000 (रुपये 12 लाख 43 हजार)। अतः आपकी कुल पूँजी होगी लगभग रुपये 24,43,000 (रुपये 24 लाख 43 हजार)।

   तथा 20 वर्षों में आप की जमा राशी 24 लाख रूपये होगी एवं आपको मिला हुआ ब्याज होगा लगभग रुपये 2,23,61,000 (रुपये 2 करोड़ 23 लाख 61 हजार)। अतः आपकी कुल पूँजी होगी लगभग रुपये 2,47,61,000 (रुपये 2 करोड़ 47 लाख 61 हजार)।

6. निवेश कहाँ करें : यह एक अहम सवाल है। निवेश के कुछ इंस्ट्रूमेंट्स हैं: (क) पूर्व निर्धारित ब्याज दर इंस्ट्रूमेंट्स (एफडी, डिबेंचर, बांड्स, आवर्ती जमा आदि (ख) रियल एस्टेट अथवा प्रॉपर्टी, जैसे कि जमीन, मकान, फ्लैट्स आदि (ग) बहुमूल्य धातु (बुलियन) जैसे की सोना/चांदी (घ) स्टॉक्स या शेयर्स।

   निश्चित ब्याज दर इंस्ट्रूमेंट्स में प्रत्याय दर (रेट ऑफ रिटर्न) काफी कम होता है जिस कारण मुद्रास्फीति दर बढ़ जाने से आपके नेट–वर्थ में अपक्षरण (एरोशन) हो सकता है जैसा की पहले भी कहा गया है। रियल एस्टेट अथवा प्रॉपर्टी में निवेश करने के लिए काफी ज्यादा पूँजी की जरुरत होती है तथा सिप (सिस्टेमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) द्वारा निवेश करना संभव नहीं होता। रियल एस्टेट अथवा प्रॉपर्टी में निवेश करने में कई सारी अन्य बाधाएँ भी हैं जिनके बारे में इन्टरनेट के जरिये अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।



   शेयर्स में निवेश करने के कई सारे फायदे हैं जो कि अन्य किसी तरह की निवेश में उपलब्ध नहीं हैं। ध्यान रखने योग्य बात यह है कि अधिक लम्बी अवधि में यह पाया गया है कि स्टॉक्स/शेयरों में सिप (सिस्टेमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) द्वारा निवेश करने से सर्वाधिक प्रत्याय (रिट्न्स) प्राप्त होता है एवं किसी

भी अन्य निवेश से ज्यादा लाभ होता है। शेयर्स में निवेश करने पर आपको रिस्क डायवर्सिफिकेशन का लाभ मिल सकता है जो अन्य किसी निवेश में नहीं मिल सकता। शेयर्स भौतिक रूप में संग्रहित नहीं किये जाते इसलिए उनके भंडारण में कोई कठिनाई नहीं होती। परन्तु बहुमूल्य धातु (बुलियन) में भौतिक रूप में निवेश करने पर भंडारण में कठिनाई हो सकती है जो म्यूच्युअल फंड्स (गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फण्ड या गोल्ड इ० टी० एफ०) के जरिये निवेश करने पर नहीं होती।

7. सिप (सिस्टेमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) द्वारा निवेश करने से कॉस्ट एवरेजिंग का लाभ मिलता है जो कि एकमुश्त निवेश में नहीं मिल पाता।

अतः, किसी अच्छे म्यूच्यूअल फण्ड में नियमित सिप (सिस्टेमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) के द्वारा निवेश से 15–20 प्रतिशत सालाना प्रत्याय (रिट्र्न्स) हासिल करना कठिन नहीं है। म्यूच्युअल फंड्स के विषय में सारी जानकारियां इन्टरनेट पर उपलब्ध हैं। निवेश करते समय यह ध्यान रखें कि आपका दृष्टिकोण सक्रिय (एक्टिव) हो तथा अपने निवेश का नियमित रूप से मूल्यांकन करें तथा उचित मुनाफावसूली (प्रॉफिट बुकिंग) करें। कुछ म्यूच्युअल फंड्स के विवरण नीचे दिए गए हैं, जिनका प्रदर्शन पिछले करीब 20 सालों में बेहतरीन रहा है :

म्यूच्यूअल फण्ड का नाम	कुल निवेश @ रु० 10,000 प्रति माह (237 महीनों के लिए)	23/6/2016 को लगभग मूल्य (रुपये)
रिलायंस ग्रोथ फण्ड	23,70,000	4,24,45,700
फ्रेंक्लिन इन्डिया प्राइमा फण्ड	23,70,000	4,22,11,200
एच/डी/एफ/सी इक्विटी फण्ड	23,70,000	3,69,36,600
फ्रेंक्लिन इन्डिया ब्लुचिप फण्ड	23,70,000	2,94,06,700
एच/डी/एफ/सी टॉप 200 फण्ड	23,70,000	2,63,52,700

सौजन्य से : वैल्यू रिसर्च ऑनलाइन की वेबसाइट से।

संसार सुन्दर है, क्योंकि इसे ईश्वर ने बनाया है। जो संसार को गंदा कहता है, वह ईश्वर का तिरस्कार कर रहा है।

–ओशो

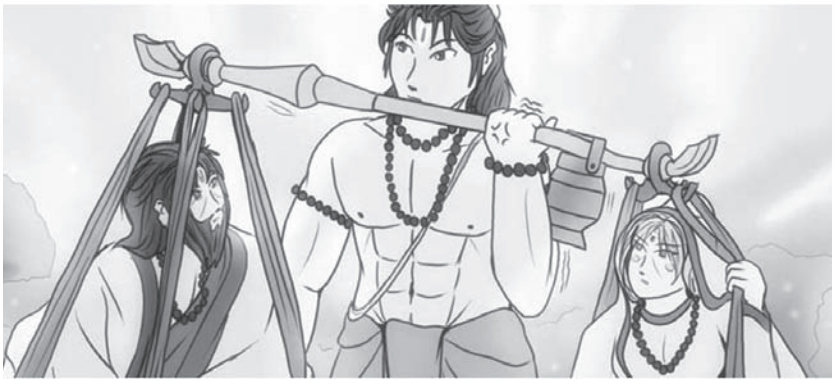
कर्म करो



अनिल राठौर
लेखाकार

माता–पिता की सेवा करना
उन पर कोई अहसान नहीं।
माता–पिता के चरणों से बढ़कर
दूजा कोई धाम नहीं।

चरणों को छू लेने से
चार धाम तीरथ हो जाऐ।
माता–पिता आशीस लगे तो
भव सागर से पार लगाऐ।



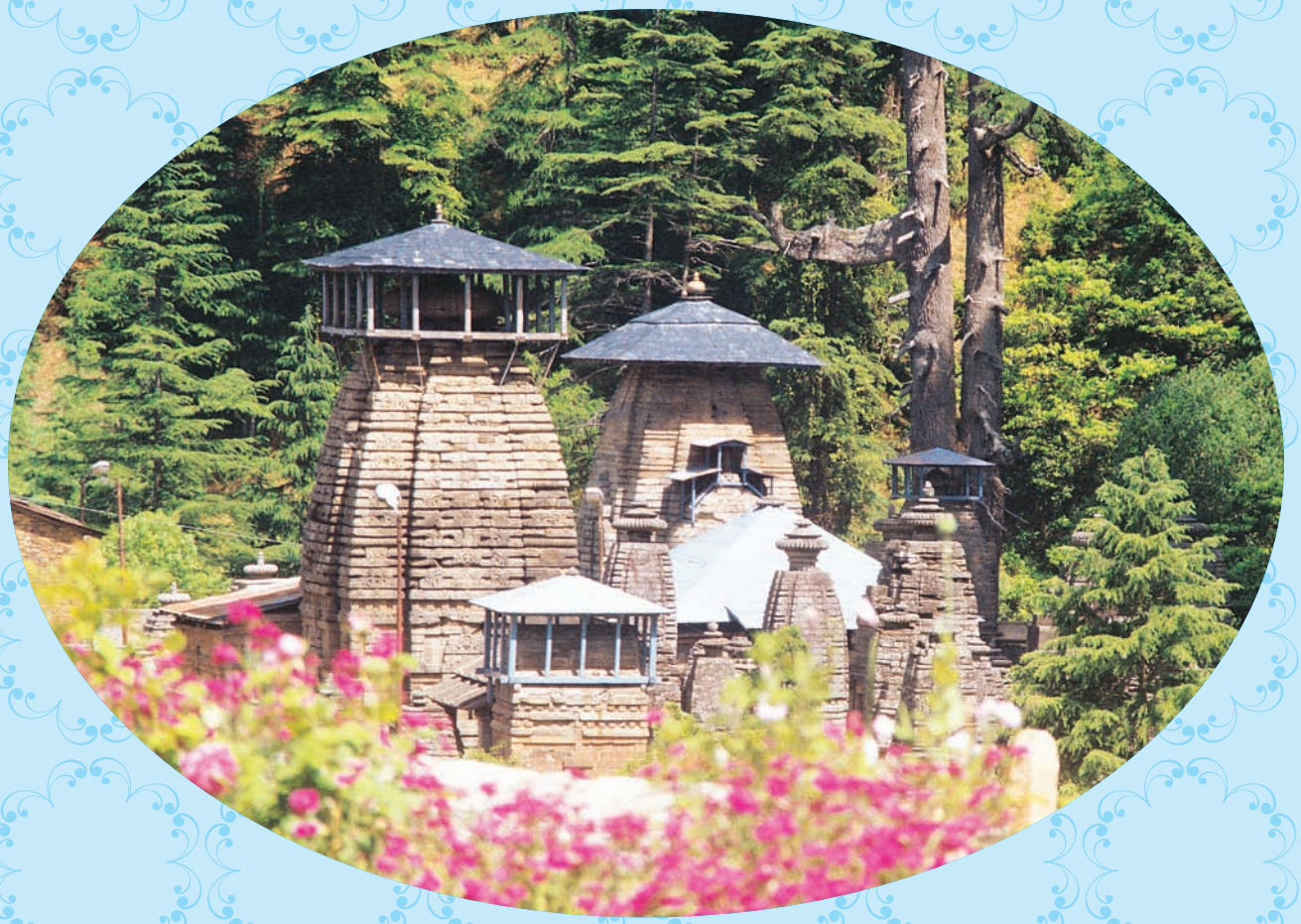
माता–पिता जायदाद नहीं है।
जिसको यह ज्ञान नहीं।
माता–पिता की सेवा करना
उन पर कोई अहसान नहीं।

शांति की शुरुआत मुस्कराहट से होती है।

–मदर टेरेसा



भागीरथी-अलकनन्दा
नदी का संगम (देवप्रयाग)



जागेश्वर मन्दिर (अल्मोड़ा)

कोषागार/उपकोषागार में पेंशन भुगतान आदेश के निरीक्षण में विचारणीय बिंदु



महावीर सिंह रावत
सहायक लेखाधिकारी

केन्द्र सरकार के समान राज्य सरकार भी अपने कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति के समय पेंशन नियमों के अंतर्गत जीवन पर्यन्त मासिक पेंशन/पारिवारिक पेंशन प्रदान करती है। भारत सरकार के छठे वेतन आयोग की सिफारिशों के क्रम में प्रत्येक राज्य सरकार ने अपने वेतन आयोग का गठन किया। तद्नुसार प्रत्येक राज्य सरकार द्वारा इस सम्बन्ध में शासनादेश/अधिसूचनाऐं जारी की गईं। इन शासनादेशों/अधिसूचना के अनुसार एक निश्चित अवधि से पूर्व सेवानिवृत्ति सम्बंधित राज्य सरकार के पेंशनरों/पारिवारिक पेंशनरों की पेंशन पुनर्रीक्षण करने का दायित्व कोषाधिकारियों को सौंपा गया है।

कोषागार/उपकोषागार निरीक्षण में पेंशनरों/पारिवारिक पेंशनरों को भुगतान की जा रही पेंशन के सम्बन्ध में फार्म–4 की मांग की जानी चाहिए। यह फार्म मासिक पेंशन भुगतान–वाउचर होता है। इस फार्म का अध्ययन करने पर कई बातें स्पष्ट हो जाती है. जो मुख्यतया निम्नानुसार हैः– (यह तथ्य स्वयं के अनुभव पर आधारित है।)

1. प्रपत्र से कोषागार से पेंशन आहरित कर रहे राज्य सरकार के विभिन्न श्रेणियों के पेंशनरों/पारिवारिक पेंशनरों की स्थिति स्पष्ट ज्ञान होता है।
2. पारिवारिक पेंशनरों की जन्मतिथि कम्प्यूटर डाटा बेस में दर्ज कर लिया गया अथवा नहीं। पेंशनरों/पारिवारिक पेंशनरों की जन्मतिथि अतिरिक्त पेंशन के लाभ के लिए विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा निर्धारित किये गये साक्ष्यों/प्रमाणों के आधार पर पेंशनरों के पी.पी.ओ. एवं कम्प्यूटर डाटा में दर्ज किया जाना है, जिससे पेंशनरा/पारिवारिक पेंशनरों को शासनादेश में उल्लेखित आयु प्राप्त होते ही अतिरिक्त पेंशन का लाभ प्राप्त हो सके।
3. विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा अपने पेंशनरों/परिवार पेंशनरों को प्रतिमाह चिकित्सा भत्ता की धनराशि स्वीकृत है। फार्म–4 से यह स्थिति स्पष्ट हो जाती है कि पेंशनरों/पारिवारिक पेंशनरों को चिकित्सा भत्ते का नियमानुसार भुगतान किया जा रहा है अथवा नहीं।
4. पेंशनरों/पारिवारिक पेंशनरों की पेंशन विभिन्न राज्य सरकार के शासनादेश/कार्यालय ज्ञाप के अनुरूप पुनर्रीक्षित की गई है, उन्हें न्यूनतम पेंशन का लाभ मिल रहा है।
5. जिन पेंशनरों/पारिवारिक पेंशनरों पर आयकर की देयता बनती उनका नाम– जीआरडी नं0 अलग से लिखकर वार्षिक पेंशन स्टेटमेंट, पी.पी.ओ., एवं डाटा बेस की जाँच की जानी चाहिए। उनमें पेंशनरों का पैन (PAN) भी अंकित है। आयकर की कटौती कोषागार से नियमानुसार की जा रही है अथवा नहीं।

विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा स्वीकृत चिकित्सा भत्ते की दर निम्नानुसार है :–

क्र० सं०	राज्य	चिकित्सा भत्ता प्र० मा० रु	देय तिथि	शासनदेश स० दिनांक
1	आंध्रप्रदेश	200 300	01/02/2010 01/12/2015	Go.Ms No.-100 date-06/04/2010 Go.Ms No.-189 date-31/12/2015
2	अरुणाचल प्रदेश	300 500	01/09/2009 01/12/2014	No. DA/PEN/2/87 Dt-11/09/2013 No. DA/PEN/2/87/Dt.5/10/2015
3	असम	600	01/04/2012	No.FPC.74/2010/30 date-17/12/2012
4	मेघालय	700	01/09/2009	No.F(PR)-49/2009/1 date-17/09/2009
5	पं. बंगाल	300	01/04/2009	No.796-F(Pen) date-09/09/2010
6	पंजाब	500	01/08/2009	No.5/60/09-1FP1/379 date-12/08/2009
7	झारखण्ड	300	01/09/2008	संकल्प दिनांक–27/3/2010
8	हरियाणा	500	01/01/2009	No. 2/363/98-1 HB III Dated-29/1/2009
9	हिमाचल प्रदेश	350	01/04/2013	No.HFW-B(A)2-6/2000 part III Date-29-04-2013
10	मणिपुर	300	01/04/2010	No.9/5/2010-FD(PIC)date-21/08/2010
11	गुजरात	300	01/10/2012	No.PGR-2012-345-CH date-03/10/2012
12	मिजोरम	200	01/06/2013	No.G.19011/24/2011-F-APF date-06/06/2013
13	बिहार	200	01/08/2014	संचिका स0वि.(27)पे0को0/42/2012 date-04/08/2014
14	गोवा	300 500	01/09/2008 01/06/2015	No.8/6/99-FIN(R&C) FPC/part file date 27/07/2010 No.DD/PA-1/Pens 15-16/TR-633/DR-282 Date-05/06/2015
15	जम्मू और कश्मीर	300	01/10/2006	No. A/87(2006)-1173 date-19/10/2006
16	त्रिपुरा	250	01/01/2009	No.F 8(3) FIN(G)109 date-15/05/2009
17	नागालैंड	400	01/04/2010	No.FIN/ROP/VI-PC/1/2008 Dated Kohima 10/08/2010

उपरोक्त तथ्यों के पूर्ण निरीक्षण के लिए यह आवश्यक है कि इसके लिए पी.पी.ओ. वार्षिक पेंशन भुगतान स्टेटमेंट का निरीक्षण कर लिया जाए।

उत्तराखण्ड राज्य के सिविल पेंशनरों/पारिवारिक पेंशनरों के पी.पी.ओ. निरीक्षण में मुख्यतः निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। जो शासनादेश दिनांक– 27/10/2008 के अनुसार है।

1. उत्तराखण्ड शासन कार्यालय ज्ञाप स० 419/XXVII(7)/2008 दिनांक–27/10/2008 अनुसार न्यूनतम पेंशन/पारिवारिक पेंशन रु0 3500/– दिनांक–01–01–2006 से पुनर्रीक्षित की गई है।
2. 10 वर्ष से कम की अर्हकारी सेवा होने पर पेंशन अनुमन्य नहीं है। ऐसी स्थिति में सर्विस ग्रेच्युटी अनुमय है। सर्विस उपादान की गणना सेवा के प्रत्येक पूर्ण छमाही अवधि के लिए आधे माह की उपलब्धियों की दर की जायेगी।

5 वर्ष की अर्हतादायी सेवा पूर्ण करने बाद शासकीय कर्मचारी को सेवा निवृत्त उपादान का पात्रता हैं।

3. स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति पर सेवानिवत्त हेतु अवशेष सेवा अथवा अधिकतम पांच वर्ष जो भी कम है, की सेवा जोड़ने की व्यवस्था समाप्त हो गई है।

4. 10 वर्ष की अर्हकारी सेवा पूर्ण होने पर ही अर्ह सेवा 20 वर्ष के औसत में पेंशन का आगणन किया जायेगा।

5. शासकीय सेवा में दिवंगत हुए सरकारी सेवक के प्रकरण में बढ़ी दर पारिवारिक पेंशन 7 वर्ष के स्थान पर 10 वर्ष अनुमन्य है। यह व्यवस्था शासनादेश निर्गत किये जाने की तिथि से लागू होगी।

6. दिनांक–01–01–2006 से विधवा एवं तलाकशुदा पुत्री को परिवार में शामिल माना गया है।

7. 80 वर्ष या उससे आयु के राजकीय पेंशनर्स/पारिवारिक पेंशनर्स 01/01/2006 से अनुमन्य पेंशन पर अतिरिक्त पेंशन कार्यालय ज्ञाप निर्गत होने की तिथि से लागू होगा।

8. उपादान की गणना में सेवानिवृत्ति की तिथि/मृत्यु की तिथि को अनुमन्य महंगाई भत्ते के अनुसार उपादान का भुगतान किया गया है। उत्तराखण्ड शासन शासनादेश संख्या–593/(1)XXVI(7)/2010 दिनांक–02 जुलाई 2010 के अंतर्गत महंगाई भत्ते की दरों में वृद्धि पर संशोधित ग्रेच्युटी का आगणन एवं भुगतान कोषागार स्तर पर किया जायेगा। संशोधित भुगतानित उपादान का अंकन लाल स्याही से स्पष्ट किया जायेगा, पेंशनरों/पारिवारिक पेंशनरों को जिन्हें महंगाई भत्ते की दरों में वृद्धि होने पर संशोधित उपादान का भुगतान किया जा जाना है, किया गया है अथवा नहीं।

कुछ महवपूर्ण तथ्य पी.पी.ओ. निरीक्षण में जिन पर ध्यान दिया जा सकता है :–

(क) शासकीय सेवा में दिवंगत कर्मचारी जिसने 7 वर्ष अर्हतादायी सेवा पूर्ण कर ली हो, के परिवार को बढ़ी दर पर पारिवारिक पेंशन अनुमन्य होगी। 7 वर्ष से कम अर्हतादायी सेवा होने पर सामान्य दर पर पारिवारिक पेंशन देय होगी।

(ख) मृत्यु उपादान (Death Gratuity) सेवा में रहते हुए शासकीय कर्मचारी की मृत्यु होने पर उसके परिवार को निम्नलिखित दर से मृत्यु उपादान देय होगा–

	अर्हतादायी सेवा	मृत्यु उपादान की राशि
(अ)	एक वर्ष से कम	उपलब्धियों का दोगुना
(ब)	एक वर्ष से अधिक किन्तु 5 वर्ष से कम	उपलब्धियों का 6 गुना
(स)	पांच वर्ष से अधिक किन्तु 20 वर्ष से कम	उपलब्धियों का 12 गुना
(द)	20 वर्ष या उससे अधिक के लिय	अर्हतादायी सेवा की पूर्ण छमाही के लिये 1/2 माह की उपलब्धियां अधिकतम 33 माह की उपलब्धियां/ अधिकतम रु0 10,00,000 है।

उपलब्धियों में मृत्यु तिथि को देय महंगाई राहत सम्मिलित है।

उत्तराखण्ड राज्य स्वत्रन्त्रता संग्राम सेनानी मासिक पेंशन/पारिवारिक पेंशन शासनादेश संख्या 354/XX(5) 11–64(स्व० सं० से०) 2002 दिनांक–16 अगस्त 2011 द्वारा रु–11000/– नियत मासिक है, यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू होगा।

उत्तराखण्ड राज्य में कुछ कोषागार/उपकोषागार से रक्षा पेंशनरों/पारिवारिक पेंशनरों को पेंशन का भुगतान किया जा रहा है। रक्षा लेखा नियंत्रक (पेंशन) इलाहाबाद के पत्र दिनांक– 16/09/2013 के सन्दर्भ में निदेशक, कोषागार एवं वित्त सेवायें, उत्तराखण्ड देहरादून के पत्रांक 991/22(5)(11)/सैन्य पेंशन पत्राचार/नि०को०वि०से०/2013 दिनांक–16 सितम्बर, 2013 द्वारा सभी कोषाधिकारियों/उपकोषाधिकारियों को निर्देशित किया गया था कि DPDO देहरादून कार्यालय से समन्वय स्थापित करते हुए सभी रक्षा पेंशनरों के मूल अभिलेख प्रत्येक दशा में माह अक्टूबर 2013 तक हस्तगत करना सुनिश्चित करें, ताकि भविष्य में रक्षा पेंशनरों को समय–समय पर रक्षा पेंशन में होने वाले परिवर्तन की स्थिति पर सभी रक्षा पेंशनरों को समान रूप से एवं समय पर सभी लाभ प्राप्त हो सकें।

उत्तर प्रदेश शासन के कार्यालय ज्ञाप/शुद्धि पत्र के कुछ अंश जोकि कोषागार/उपकोषागार में पेंशन प्रकरणों के निरीक्षण में आवश्यक हैः–

1. उत्तर प्रदेश सरकार के सिविल पेंशनर की पुनर्रीक्षित पेंशन पुनरीक्षण पूर्व वेतनमान के सदृश (corresponding) वेतन बैंड में न्यूनतम वेतन तथा ग्रेड पे के योग के 50% से कम नहीं होगी, एच.ए. जी तथा उच्च वेतनमानों के लिए यह वेतनमान के न्यूनतम का 50% होगी।

2. जहां अर्हकारी सेवा 33 वर्ष से कम है, वहाँ यह धनराशि आनुपातिक रूप से कम कर दी जायेगी, किन्तु किसी भी दशा में रु0 3500/– प्रतिमाह से कम नहीं होगी।

   (शासनादेश संख्या–3–1358/दस–2010 दिनांक–10–07–2010)

3. 80 वर्ष की आयु के पेंशनरों/पारिवारिक पेंशनरों को अतिरिक्त पेंशन/प्रभावी दिनांक–01–01–2006 है। यदि कोई पेंशनर दिनांक–01–01–2006 के पूर्व 80 वर्ष की आयु पूर्ण कर लेता है, तो उसे उक्त योजना का लाभ दिनांक–01–01–2006 से अनुमन्य होगा। दिनांक–01–01–2006 के पश्चात, 80 वर्ष की आयु पूर्ण करने पर संबंधित पेंशनर को इसका लाभ उस माह की पहली तारीख से मिलेगा, जिस माह में वह 80 वर्ष की आयु पूर्ण करता है।

   (उत्तर प्रदेश शासन वित्त (सामान्य) अनुभाग–3 संख्या सा–3–1469/दस–2010 लखनऊ दिनांक–6 अगस्त 2010 कार्यालय ज्ञाप)

4. उत्तर प्रदेश सरकार के सिविल पारिवारिक पेंशनरों की जन्मतिथि कार्यालय अभिलेखों में उल्लेख न होने पर हाई स्कूल प्रमाण पत्र, यदि हाई स्कूल प्रमाण उपलब्ध न हो तो, ऐसे पारिवारिक पेंशनरों की जन्म तिथि हेतु ड्राइविंग लाइसेन्स/पैनकार्ड/निर्वाचन पहचान पत्र/पासपोर्ट में अंकित तिथि को मान्यता दी जायेगी। यदि उक्त कोई साक्ष्य न हो, तो सी.एम.ओ. द्वारा दिया गया आयु प्रमाण–पत्र मान्य होगा।

   (शासनदेश सा–3–1541/दस–2008–308/97 टी.सी. दिनांक–7/1/2009)

उपरोक्त शासनादेश में यह प्रावधान कि 80 वर्ष से अधिक आयु के पारिवारिक पेंशनरों, जिनकी जन्म तिथि के सम्बन्ध में मान्य आयु–प्रमाण पत्र विभागाध्यक्ष/कार्यालयाध्यक्ष, जहा से पेंशनर सेवानिवृत्त हुआ था, के माध्यम से कोषागार को उपलब्ध कराने की व्यवस्था है।

उक्त व्यवस्था के कारण पारिवारिक पेंशनरों को होने वाली कठिनाइयों को दृष्टिगत रखते हुए उत्तर प्रदेश शासन द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि पारिवारिक पेंशनर सेवानिवृत्ति के जनपद से भिन्न जनपद

से यदि पेंशन प्राप्त कर रहा/रही है, तो पेंशन आहरण के जनपद के विभागाध्यक्ष/द्वारा यह प्रकिया अपनायी जायेगी।

समस्त कोषाधिकारियों से अपेक्षा की गई थी कि वे पेंशनरों से, उनकी पारिवारिक पेंशन के हकदार व्यक्ति जैसे पी.पी.ओ. में अंकित है, की जन्मतिथि की जानकारी अभिलेखों एवं पेंशनर डाटा बेस में अंकित कर लें। इसी प्रकार पारिवारिक पेंशनर जिनकी आयु 80 वर्ष की नहीं हुई है, से भी उनकी जन्म तिथि सम्बन्धी मान्य अभिलेख/प्रमाण पत्र प्राप्त करना सुनिश्चित किया जाये, ताकि उन्हें अतिरिक्त पेंशन का लाभ समय से सुगमता पूर्वक मिल सके।

(शासनादेश संख्या–सा–3–1341/दस–2010–308/97 टी.सी.लखनऊ दिनांक–23 अगस्त, 2010)

पेंशनर/पारिवारिक पेंशनर की मृत्यु होने पर जीवनकालीन अवशेष का भुगतान किया गया है, अथवा अधिक भुगतानित पेंशन की वसूली कर ली गई है।

सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो, सूरज की तरह जलना भी होगा।

–ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

बाबा केदारनाथ की महिमा



बृजभूषण सेमवाल
बहुकार्यकर्मी

देवभूमि उत्तराखण्ड राज्य में बाबा भोलेनाथ के मंदिर केदारनाथ धाम में कदम रखते ही आनन्द और आश्चर्य की सीमा नहीं रहती। समुद्र की सतह से बारह हजार फुट की ऊँचाई पर मंजुल तीर्थ पर पहुँचते ही शीत क्षुधा पिपासा आदि कितने ही विघ्नों के होते हुए भी तीर्थयात्री का मन–भाव समाधि में लीन हो जाता है। धवल–धवल पर्वत पंक्तियों के बीच खड़ा मानव भगवान की अखण्ड विभूति कर देख–देख कर ठगा सा रह जाता है। इस रमणीय भूमि में स्वयं ही सत्व भाव उमड़ आता है। यहाँ प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य, मंदाकिनी की कल–कल करती ध्वनियाँ, सफेद चादर से ढकी हुई बर्फ की हिमालय की चोटियाँ तीर्थयात्रियों का मन मोह लेती हैं। बाबा केदारनाथ के दर्शन से पुण्य का फल मिलता है। यहाँ पापी लोगों के मन में श्रद्धा का उदय नहीं होता है। इसलिये मन, श्रद्धा–भाव और प्रेम–त्याग की भावना रखते हुए बाबा केदारनाथ के दर्शन करें।



संसार में मनुष्य जन्म लेता है, उस दिन से मृत्यु भी साथ लेकर आता है। किन्तु जैसे–जैसे बड़ा होता है, वैसे–वैसे ही कर्म भी करता है। कर्म करते–करते उससे कई पाप भी हो जाते हैं। इन पापों का विनाश करने के लिये तथा पुण्य पाने के लिये यह मानव जीवन भर तत्पर रहता है। जिन मानवों ने नगरों में रह कर गंगा जल, छुआ तक नहीं, मंदिरों में झांका तक नहीं, वे भी बाबा केदारनाथ की सत्व देवभूमि में आकर मन्दाकिनी की अति शीतल जल धारा में श्रद्धा भाव से स्नान करके बाबा भोलेनाथ की जय के साथ हर–हर महादेव के जय घोष से मन्दिर में दर्शन करते हैं। उन्हें भगवान शंकर के ज्योर्तिलिंगों के दर्शन प्राप्त हो जाते हैं। उन्हें इस संसार मोक्ष मुक्ति प्राप्त हो जाती है। केदार नामक राजा सतयुग में सप्तद्वीप पर राज्य करता था। वह वृद्ध होने पर अपने पुत्र को राज्य देकर वन में जाकर तप करने लगा। जहाँ तप किया, वह स्थान केदारनाथ खण्ड के नाम प्रसिद्ध हुआ। राजा केदार की

पुत्री वृन्दा कमला का अवतार थी। वृन्दा ने जहाँ तप किया, वह स्थान आज वृन्दावन के नाम से प्रसिद्ध है। यह ब्रह्मा–वैवर्त पुराण में कहा गया है।

1. लिंग पुराण– जो मनुष्य सन्यास लेकर केदारनाथ में निवास करता है, वह शिव के समान हो जाता है।
2. वामन पुराण में कहा गया है कि रुद्र का पूजन करने से मनुष्य स्वर्ग लोक प्राप्त करता है।
3. पदमपुराण में लिखा है कि केदारनाथ के दर्शन व स्पर्श मोक्षदायक प्राप्त होता है।
4. कूर्म पुराण में बताया गया है कि यहाँ स्नान करने तथा केदार बाबा के दर्शन से रुद्रलोक प्राप्त होता है।
5. गुरुड़ पुराण में कहा गया है कि केदार तीर्थ में सम्पूर्ण पापों का नाश होता है।
6. सौर पुराण में लिखा गया है कि भोले बाबा के तीर्थ नगरी में जो स्नान व दर्शन करता है, वह गणों का राजा होता है।

धार्मिक ग्रन्थों में यह कहा गया है कि सर्वप्रथम केदारेश्वर ज्योर्तिलिंग के दर्शन करने के पश्चात् ही बद्रीनाथ के दर्शन करना चाहिये।

बाबा की तीर्थनगरी में श्राद्ध, तर्पण आदि करने से पितरों की मुक्ति हो जाती है। उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है और उन्हें शिवलोक में स्थान मिलता है।

पौराणिक शिव पुराण कथा में कहा गया है कि पाण्डवों पर गौहत्या व गुरु हत्या का पाप छुड़ाने के लिए केदारेश्वर दर्शनार्थ केदार तीर्थ में गये। तब श्री शिव भैंसे का रूप धारण करके वहाँ से चले गये क्योंकि बाबा भोलेनाथ पाण्डवों को दर्शन नहीं देना चाहते थे। पाण्डवों ने कठिन परिश्रम तप और प्रार्थना से शिव से कहा कि हे नाथ, हम पर कृपा करके हमारे पापों को दूर करो और हमें दर्शन दो। तब बाबा भोलेनाथ ने प्रसन्न होकर पाण्डवों को दर्शन दिये। उसी स्थान पर अपने पिछले हिस्से धड़ सहित विराजमान हो गये। तब पाँडव गौहत्या और गुरूहत्या के पाप से मुक्त होकर पुण्य के भागी बन गये। तब पाँडवों ने इस स्थान पर केदारनाथ मन्दिर का निर्माण किया। तत्पश्चात स्वर्ग लोक के लिये प्रस्थान कर गये।

पाण्डवों द्वारा बनाया गया मन्दिर सुन्दर व भव्य है। मन्दिर के बाहर पार्वती माँ, पांडवो, व लक्ष्मी माँ की सुन्दर मूर्तियाँ हैं। मन्दिर के द्वार के ऊपर सुन्दर कलश है। मन्दिर के मध्य में केदारनाथ की स्वंयभू की मूर्ति है। पीपल का छोटा नन्दी और बाहर दक्षिण भाग में बड़ा नन्दी बैल है। जो भोलेनाथ बाबा का परम भक्त और सवारी था। मन्दिर के द्वार पर दो द्वारपाल है और दस–पन्द्रह मूर्तियाँ हैं। बाबा केदारनाथ जी श्रृंगार मूर्तियाँ पंचमुखी हैं। यह हर समय वस्त्र और आभूषण से सुसज्जित रहती हैं। मन्दिर के पीछे के तीन हाथ लम्बा अमृत–कुण्ड है, जिसमें शिवलिंग स्थित है। पूर्वोतर भाग में हंसकुण्ड तथा रेतसकुण्ड है। यहीं पर ईशानेश्वर महादेव है। पश्चिम में सुबलककुण्ड है। मन्दिर के समीप एक लम्बा उदककुण्ड है तथा मन्दिर के पीछे मीठे पानी का कुण्ड जो यात्रीगण को प्रसाद के रूप में दिया जाता है। पुरी के दक्षिणी भाग में छोटी पहाड़ी पर बाबा मुकुण्डा भैरवनाथ जी का मन्दिर है। गंगा और मन्दाकिनी के संगम के पास क्रोंच तीर्थ है। क्षीर गंगा और मन्दाकिनी के संगम पर ब्रहमा तीर्थ है। उसके दक्षिण में बम–बम भोलेनाथ जी बोलो तो वहाँ पर बुद–बुदाकर जल कुण्ड दिखाई देता हैं। शिवजी के बायें भाग में इन्द्र पर्वत है। यहीं इन्द्र ने तप किया था। भुवकुण्ड भैरव चन्द्र शिला तथा चोरावाड़ी ताल तथा वासु की ताल है।

केदारनाथ धाम जाने के लिये यातायात के साधन

यहाँ बस, कार, अन्य सड़क मार्ग की जितनी भी गाड़ी हैं, उनसे गौरीकुण्ड तक पहुँचा जा सकता है। उसके बाद गौरीकुण्ड से केदारनाथ धाम की 14 किमी0 की पैदल यात्रा कर सकते हैं। यहाँ यात्रीगण घोड़े की सवारी पगडण्डी, कण्डी से यात्रा कर सकते हैं। अगर यात्रीगण हवाई मार्ग से यात्रा करना चाहते है, तो यहाँ नारायण कोटि फाटा में दस हेलीकॉप्टर आपकी सेवा में तत्पर हैं। केदारनाथ में खाने व रहने की उचित व्यवस्था है। उत्तराखण्ड राज्य सरकार से अब यात्रियों को विशेष सुविधा–जनक सेवा प्रदान की जा रही है जिससे यात्रीगणों को समस्या का सामना न करना पड़े। इसलिये विश्व के सभी भक्तजनों से आग्रह है कि बाबा केदारनाथ जी के दर्शन करने एक बार जरूर आयें। धर्म शास्त्रों में कहा गया कि जो केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री व यमुनोत्री के दर्शन नहीं करता, उसका जन्म निरर्थक हो जाता है। भक्तजनों के बाबा भोलेनाथ बहुत दयालु व भोले हैं। उनकी थोड़ी भक्ति करने पर भी वे प्रसन्न हो जाते हैं। वह हर भक्त की मनोकामना पूर्ण कर देते हैं। अपने भक्तों को निराश नहीं करते हैं। इसलिये तो इन्हें बाबा भोलेनाथ कहा जाता है। आज भी शिवशंकर कैलाश पर्वत में साक्षात् साधना कर रहे हैं।

आज भी विराजमान है बाबा भोले नाथ जी

आज भी विराजमान है केदारनाथ भूमि में भोलेनाथ जी, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है। सन् 2013 में वहाँ विकराल प्राकृतिक आपदा आयी थी जिसमें हजारों तीर्थ यात्रियों की जानें गयी थी एवं लाखों लोग घायल हो गये थे। अरबों की राजस्व सम्पति जल प्रलय में समा गयी थी। तब केदारनाथ में बाबा का मन्दिर ही बच पाया था। मन्दिर के चारों ओर से बड़े–बड़े होटल दुकानें, धर्मशालायें, अतिथि–गृह एक मिनट में जल प्रलय में समा गये थे। जहाँ 16 जून 2013 से पहले केदारनाथ होटलों, दुकानों, व अन्य चीजों से भरा–भरा मिलता था, वहाँ आज खाली मैदान लग रहा है। पहले दूर से बाबा भोलेनाथ का मन्दिर नहीं दिखता था, वह अब साफ दिखाई देता है। कहते हैं कि शिवशंकर जी को शान्त व एकान्त में साधना करना अच्छा लगता है। ऐसा लगता है शायद, शिवजी ने रूद्र रूप धारण किया हो क्योंकि वहाँ अशान्त वातावरण हो गया था। तीर्थयात्री वहाँ आकर जश्न मनाते थे। वहाँ के लोगों में अहम–भाव आ गया था। भक्ति–भाव कम हो गया था। इसलिये बाबा क्रोधित हो गये होंगे, तभी तो चोरावाड़ी तसल फट गया और वहाँ चंद सेंकण्ड़ों में सब स्वाहा हो गया। अमीर व्यक्ति भी गरीब हो गये। वे अपने प्राण बचाने के लिये भोजन की भीख माँगते रहे। वहाँ ऐसी विचित्र घटना घटी कि आज भी लोगों को वह विकराल आपदा डरा रही है। अब वहाँ तीन साल बाद अच्छा वातावण हो गया है। पहले जैसी यात्रा चलती थी, वैसी चल रही है। मन्दिर के चारों ओर सुन्दर वातावरण बना दिया गया है। बाबा भोलेनाथ ने बता दिया कि मैं आज भी कलियुग में विराजमान हूँ। जो बुरा करेगा और पाप करेगा, मैं उसको दण्ड अवश्य दूँगा। अब तो बाबा भोलेनाथ को शान्त व एकान्त प्रिय वातावरण मिल गया है।

कैसे मनाऊं



महावीर सिंह रावत
सहायक लेखाधिकारी

कुछ लिखने की सोचता हूँ
कलम है कि आगे नहीं बढ़ती
जिद ऐसी पकड़ ली
कि उंगुलियों से उलझती।

कलम को भी अहसास हो गया
सुन–सुन पत्नी के तानों से
तभी तो इतनी हठी हो गई
मानती नहीं, गिड़गिड़ाने से।

छोड़ जिद, सुहाना सफर है
इस सफर का लुत्फ उठा लें
आपस में उलझकर क्या हासिल होगा
खुशी–खुशी दो दिन गुजार लें।

मन चंचल, बस में किसका
तुझसे बेपनाह आशिकी
संग–संग तुम बढ़ोगी आगे
जीवन भर बनी रहेगी ताजगी।



जान डालती, अनजान हाथ में
कलम तेरी महिमा निराली
मेरी फजीहत पर क्यों तुली हो
आ, मिलकर भगाऐं कंगाली।

पत्नी को प्यार से मना लूँगा
हे कलम ! मैं कैसे तुझे मनाऊँ
कैसे अपने जीवन की व्यथा
तेरे बूते दुनिया को सुनाऊँ।

हे कलम ! तुझमें अपार शक्ति है
अज्ञान को तू, दूर भगाती
नतमस्तक हूँ, हे कलम
तू ही तो, ज्ञान की धारा बहाती।

डाक बाबू की वापसी



भास्करानन्द त्रिपाठी
सहायक लेखाधिकारी

सुना है, डाक बाबू की फिर से वापसी होने जा रही है। डाक बाबू का नाम सुनते ही खाकी कुर्ता, खाकी पैंट, कन्धे पर लटकते हुए एक खाकी बैग का स्मरण हो आता है। जिस बैग के अन्दर अन्तर्देशीय पत्र, पोस्ट कार्ड, रजिस्ट्री के लिफाफे या मनीआर्डर के फार्म हुआ करते थे। गाँव, देहात की चौहदी में पहुंचते ही डाक बाबू के आगमन की सूचना कानों कान पहुँच जाती थी। एक अजीब सी उत्सुकता, हल्की सी सिरहन उन बूढ़ी आँखों में दौड़ पड़ती थी, जिनकी आँखें अपनों की कुशल क्षेम जानने के लिये बेताब हुआ करती थी।



डाक बाबू हर दिल वह अजीज सरकारी मुलाजिम था जिसका इन्तजार हर घर और परिवार को रहता था। कोई पोस्टमैन कहे या चिट्ठी रसैन कहे, पर प्यार से उसे डाक बाबू ही पुकारा जाता था। गाँव के किसी नुक्कड पर या किसी के आँगन में बैठे डाक बाबू उन बूढ़े अशिक्षित लोगों की चिट्टीयाँ बाँच रहे होते थे। एक भीड अनायास ही डाक बाबू के इर्द–गिर्द जमा हो जाया करती थी। तब एक मनीआर्डर आता था, जो सामूहिक खुशी लेकर आता था। गोया कि वह मनी आर्डर किसी के भी काम आ सकता था। जरूरतमंद पड़ोसी पहले ही बता देते थे, कि इसमें से इतना मेरे लिये रख देना। पैसा किसी के पास नहीं था। आज पैसा तो है परन्तु एकाकीपन है, अपनत्व नहीं। शायद पैसा तोड़ने का काम करता है, गरीबी लोगों को जोड़ने का काम करती है।

सुना है डाक बाबू की फिर से वापसी होने जा रही है। परन्तु अब उस थैले में न चिट्ठियाँ होंगी, ना मनीआर्डर, ना वे पोस्टकार्ड होंगे और न वह उत्साह।

डाक बाबू गंगा जल लेकर गाँव–गाँव विचरण करेंगे। डाक बाबू के उस स्वरूप की तुलना आज के गंगा जल विक्रेता डाक बाबू से करते हैं, तो कल्पना लोक में गोते लगाते हुये अतीत की गहराइयों में मन डूब जाता है। दृष्टिपटल पर एक अजीब सा काल्पनिक दृश्य उभर आता है।

डाक बाबू घर–घर दरवाजे पर दस्तक देते हैं और चिल्ला–चिल्ला कर पूछ रहे हैं।

कोई गंगा जल ले लो .... गंगा जल।
गंगोत्री का लो, यमुनोत्री का लो
हरिद्वार या प्रयाग का लो
गया से गोमुख तक कहीं का लो
ले–लो भाई! गंगा जल ले–लो।

परन्तु कोई दरवाजे से बाहर नहीं निकलता है। कोई भीड़ डाक बाबू को पूछने नहीं आती है। भला आये भी क्यों? दूध वाला भी दूध का बर्तन सिर पर रख कर आवाज देता है। कोई नहीं खरीदता शहद वाला भी शहद की बाल्टी लिये घर–घर दस्तक देता है, कोई घी भी नहीं खरीदना चाहता है। क्योंकि वे देहरी पर उपलब्ध है। लेकिन शराब की एक बोतल खरीदने के लिये आदमी ठेके पर जाता है, वहाँ लाईन लगाकर घंटों अपनी बारी का इन्तजार करता है। अनुशासन में रहते हुये शराब मालिक के निर्देशों का अक्षरसः पालन करता है। उसे भय भी सताता है कि कहीं मालिक ने शराब देने से मना कर दिया या कहीं नम्बर आने तक शराब खत्म हो गयी, तो सारा दिन व सारा श्रम बेकार हो जायेगा। इसलिये वह लाईन में स्थित प्रज्ञ भाव से खड़ा रहता है। बगुले की तरह मछली रूपी बोतलों पर टक–टकी लगाये रखता है। हाथ में बोतल आते ही वह आनन्दित व उत्साहित हो जाता है। कीमत जानने की जुर्रत नहीं करता है। लेकिन घी, दूध, शहद बेचने के लिये तो चीख–चीख कर आवाज देनी पड़ती है। दर–दर भटकना भी पड़ता है। यही हश्र डाक बाबू व उनके गंगाजल का भी होना था, जो दूधिये और उसके दूध का होता है।

डाक–बाबू चिल्लाये जा रहे हैं..... ''भाई! गंगाजल ले लो.... पवित्र गंगाजल''। जवाब के नाम पर अगर कुछ सुनाई देता है तो वह अपनी ही प्रतिध्वनि।

अपने गौरवशाली अतीत और आत्मीयता का स्मरण करते हुये डाक बाबू झल्लाते हुये अपने मोबाईल फोन की ओर देखते हैं और उसे श्राप दे बैठते हैं। ''बुरा हो तेरा, सत्यानाश हो.....तूने उन चिट्ठियों का सर्वनाश किया जो मेरी इज्जत और आबरू हुआ करते थे। डाक–बाबू की रोजी–रोटी पर काल बन कर क्यों आया? तेरे ही कारण ये सारे पोस्ट ऑफिस गौशाला में तब्दील हुये हैं। तेरे कारण मुझे गंगाजल बेचना पड़ रहा है'', आदि–आदि। अचानक डाक बाबू को अपने सरकारी मुलाजिम होने का अहसास हो आया, वे संयत भाव से बोले कोई बात नहीं, गंगा जल नहीं भी बिकेगा तो भी तनख्वाह तो मिलेगी ही, सरकारी मुलाजिम जो हूँ। अपना कर्तव्य निभायेंगे। बिके तो भला, ना बिके तो भी क्या? अपनी कर्तव्य निष्ठा के चलते वे आवाज देते गये। भाई गंगा जल ले–लो... गंगा जल, यह वही पवित्र गंगा जल है जो पापों को हरता है, मरते समय एक बूँद गले में पड़ जाय, तो भवसागर पार कर देता है। पूजा में चढता है, अरिष्ठ निवारण करता है। कभी नहीं सड़ता है, कीड़ा नहीं पड़ता है, भाई! गंगा जल ले लो।

"क्या लाये हो डाक बाबू? अन्ततः एक आवाज पीठ

पीछे से आ ही गयी। गंगाजल है हुजूर! पवित्र गंगाजल।"

आधुनिक वेशभूषा में सुसज्जित महानुभाव डाक–बाबू को सिर से पैर तक निहारते हुये बोले– गंगाजल की एक बोतल को देखने लगे। बोले क्या गारंटी है कि यह गंगा जल है? इसमें एक्सपायरी डेट क्यों नहीं लिखी है? अगर यह गंगाजल नहीं निकला, तो हम उपभोक्ता फोरम में खींचेंगे। तुम्हें पहले हम सरकार से सूचना अधिकार नियम के अन्तर्गत सूचना माँगेंगे कि यह शुद्व गंगाजल है या नहीं तभी हम खरीदेगें। लो... अपनी बोतल वापस ले जाओ। गंगाजल की बोतल वापस अपने बैग में रख कर डाक बाबू चल दिये। लेकिन मन में एक यक्ष प्रश्न यही उठ रहा था कि आदमी शराब की बोतल खरीदते समय प्रश्नों की यह झड़ी कभी भी क्यों नहीं लगाता है?

चलते–चलते वही आवाज फिर से डाक बाबू के कानों में कौंधी– अरे डाक बाबू! सुनो. ''अगर आपके पोस्ट ऑफिस में शुद्ध गौमूत्र मिलता हो, तो अगली बार लेते आना, लेकिन शुद्ध होना चाहिए। डाक–बाबू दैन्य भाव से बोले हाँ शायद, यही कमी रह गयी है जिसे भविष्य में पूरा कर दिया जायेगा..... अच्छा नमस्ते, फिर आयेंगे आपके गांव।

नमस्ते जी नमस्ते।

ग़ज़ल



सुशील देवली
सहायक लेखाधिकारी

फौरन इस्लाह कीजिये जहाँ गुन्जाइश हो।
कभी खुद की बुराइयों की भी नुमाइश हो।।

बड़ा ही आसाँ है दूसरों को आइना दिखा देना।
कभी खुद के आइने में चेहरों की पैमाइश हो।।

यूँ केवल मोहब्बत के भरोसे चूल्हे नहीं जला करते।
जिन्दगी क्या है जानने की मुस्लसल आजमाइश हो।।

क्यूँ करते हो बुरा किसी का सब तो खुदा देखता है।
सबका कर भला, हो भला हर दिल में यही ख्वाहिश हो।।

भक्त का भाव



प्रशांत जोशी
लेखाकार

जो मन भी रमता, तन भी रमता।
देवों के देव की, कहाँ कोई समता।।
निगुण निराकार, ना कोई आकार है।
भक्तों के मुँह, पर सदा जयकार है।।
वह जग में, आदि अनंत है।
जिसे माया का ना प्रपंच है।
वह थोड़ी भक्ति, से प्रसन्न हो जाता।
भक्तों के कष्टों में, मन सदा मुस्कुराता।।
वह अनेक रूप भक्तों, के दुःख हरता है।
उनके भक्तों के प्राण, काल कहाँ हरता है।।
शिव को समस्त, तत्वों में पाता।
उनके दर्शन मन, हर्षित हो जाता।।



वर्ष 2015-16 शैक्षिक सत्र के दौरान हाईस्कूल/इंटरमीडिएट परीक्षाओं में उच्च अंक प्राप्त करने वाले होनहार छात्रों का संक्षिप्त विवरण–

बोर्ड–आईसीएसई (कक्षा 10वीं) वर्ष 2016

विद्यालय	राजा राम मोहन राय अकेडमी, देहरादून	
छात्र का नाम	करन सामंत	
पिता का नाम	श्री जीवन सिंह सामंत	
माता का नाम	श्रीमती लक्ष्मी सामंत	
अंक प्राप्त किए (प्रतिशत में)	92.5	

बोर्ड– सीबीएसई (कक्षा 10वीं) वर्ष 2016

विद्यालय	एसजीआरआर पब्लिक स्कूल, बिंदाल देहरादून	
छात्रा का नाम	अंकिता सीपाल	
पिता का नाम	श्री जगत सिंह सीपाल	
माता का नाम	श्रीमती कमला सीपाल	
अंक प्राप्त किए (प्रतिशत में)	88	

बोर्ड– आईसीएसई (कक्षा 10वीं) वर्ष 2016

विद्यालय	हिल्टन स्कूल, देहरादून	
छात्र का नाम	आदित्य भारती मूसा	
पिता का नाम	श्री राजकुमार मूसा	
माता का नाम	श्रीमती अंजना मूसा	
अंक प्राप्त किए (प्रतिशत में)	84.5	

बोर्ड– सीबीएसई (कक्षा 12वीं) वर्ष 2016

विद्यालय	केन्द्रीय विद्यालय, एफआरआई, देहरादून	
छात्र का नाम	नील चटर्जी	
पिता का नाम	श्री गौतम चटर्जी	
माता का नाम	श्रीमती पूर्णिमा चटर्जी	
अंक प्राप्त किए (प्रतिशत में)	81.16	

अंग्रेजी शब्दों के सरल तथा उपयुक्त हिन्दी शब्द

संकलनकर्ता

श्री विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी

Apparent reason	प्रत्यक्ष कारण
Appear in person	स्वयं उपस्थित होना
Appellate power	अपीलीय अधिकार
Appended to	से संलग्न
Book Adjustment	पुस्तक समायोजन
Book value	अंकित मूल्य
Book rate	निर्धारित दर
Bottleneck	अड़चन, बाधा
Civil liberty	नागरिक स्वतन्त्रता
Civil procedure	सिविल/दीवानी प्रक्रिया
Claim Accepted	दावा स्वीकृत
Clarification sought	स्पष्टीकरण मांगा गया
Debit balance	नामे शेष
Debited to	के नामे डाला गया
Deemed to be	समझा जायेगा
Decided on merits of	गुण दोष के आधार पर निर्णीत
Effect of	का परिणाम/प्रभाव
Efficiency of administration	प्रशासन की दक्षता
Elected member	निर्वाचित सदस्य
Entertainment tax	मनोरंजन कर
Faithful employee	निष्ठावान कर्मचारी
False charge	मिथ्या आरोप
Farewell function	विदाई समारोह
Faulty action	दोषपूर्ण कार्रवाई
Good reason	पर्याप्त कारण
Government undertaking	सरकारी उपक्रम
Grace period	रियायत की अवधि
Gradation list	पदक्रम सूची

Handwriting expert	हस्तलेख विशेषज्ञ
Hand cash	नकदी
Harsh treatment	कठोर / रूखा व्यवहार
Head quarters	मुख्यालय
Implication of rule	नियम का आशय
Important papers	महत्वपूर्ण कागजात
Imprest money	अग्रदाय धन
Judicial enquiry	अदालती जाँच
Kept in abeyance	आस्थगित रखा गया
Leave preparatory to retirement	सेवा–निवृन्तिपूर्व अवकाश
Majority of	अधिकांश
Major works	बड़े निर्माण कार्य
Malicious act	दुर्भावनापूर्ण
Native Language	देशी भाषा
Natural resources	प्राकृतिक संसाधन
Obsolete equipment	अप्रचलित उपस्कर
Period of service	सेवावधि, सेवाकाल
Permanent post	स्थायी पद
Permit card	अनुज्ञा पत्र
Permissible limit	अनुज्ञेय सीमा
Quality control	गुणता नियंत्रण
Ratio chart	अनुपात चित्र
Rational basis	युक्तियुक्त आधार
Sale proceeds	विक्रय आय
Salient points	प्रमुख बातें
Take care of	देखभाल करना
Take effect	प्रभावी होना
Unanimous decision	सर्वसम्मत निर्णय
Valid argument	मान्य दलील
Validation of papers	प्रलेखों का वैधीकरण
Watching progress	प्रगति की देखभाल
Withholding of increment	वेतन–वृद्धि रोक लेना
With immediate effect	तत्काल प्रभाव से

वर्ष 2015-16 के दौरान उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रमाण–पत्र तथा नकद पुरस्कार पाने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों का संक्षिप्त विवरण

क्रमांक	नाम तथा पदनाम सर्व/श्री/श्रीमती/सुश्री
1.	जे.के. जोशी, वरि0 लेखाधिकारी
2.	एस.एस. पल्याल, वरि0 लेखाधिकारी
3.	ओमप्रकाश, वरि0 लेखाधिकारी
4.	आर. एस. नेगी, लेखाधिकारी
5.	पी.के. कौल, सहायक लेखाधिकारी
6.	बृजेश खुल्बे, सहायक लेखाधिकारी
7.	संजय कुमार रैना, सहायक लेखाधिकारी
8.	दीप चन्द बंसवाल, सहायक लेखाधिकारी
9.	विजय चौहान, सहायक लेखाधिकारी
10.	अश्वनी सिंह, सहायक लेखाधिकारी
11.	नवीन त्रिपाठी, सहायक लेखाधिकारी
12.	विमल प्रसाद जोशी, वरि0 लेखाकार
13.	धर्म सिंह, वरि0 लेखाकार
14.	पुष्पेन्द्र सिंह, लेखाकार
15.	अनुराग मिश्रा, लेखाकार
16.	मोनिका सिंह, लेखाकार
17.	प्रवीण कुमार मिश्रा, लेखाकार
18.	अमित डबास, डी0ई0ओ0
19.	आशीष पाल, एम0टी0एस0
20.	संजय सिंह कुंवर, एम0टी0एस0
21.	फारूख जावेद, एम0टी0एस0
22.	आनन्द कुमार, एम0टी0एस0
23.	सूरज क्षेत्री, एम0टी0एस0
24.	बबीता, एम0टी0एस0
25.	अमित कुमार, एम0टी0एस0
26.	जतिन भारती, एम0टी0एस0
27.	सोम प्रकाश, एम0टी0एस0

वर्ष 2015-16 के दौरान आयोजित हिन्दी सप्ताह की झलकियाँ



महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तथा महालेखाकार (ले0एवंहक0) द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर हिन्दी सप्ताह की शुरुआत की गई।



कार्यक्रम की शुरुआत कार्यालय की महिला कर्मचारियों द्वारा सरस्वती वंदना से की गयी।



गृहमंत्री का संदेश पढ़ते हुए उपमहालेखाकार (निधि)।



महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तथा महालेखाकार (ले0एवंहक0) द्वारा कार्यालयीन छमाही हिन्दी बुलेटिन का विमोचन किया गया।



उद्घाटन समारोह में प्रस्तुतियों का आनन्द उठाते अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



स्टाफ कर्मियों की शानदार उपस्थिति के चलते हिन्दी सप्ताह समारोह की बेहतरीन शुरुआत हुई।



उद्घाटन समारोह में महालेखाकार महोदय संबोधित करते हुए।



टंकण प्रतियोगिता में हिस्सा लेते हुए प्रतिभागी।



शब्द सामर्थ प्रतियोगिता में हिस्सा लेते अहिन्दी भाषी अधिकारी एवं कर्मचारी।



वर्णानुक्रम प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा का परिचय देते कार्यालय कर्मी।



पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान पुस्तकों का अवलोकन करते महालेखाकार एवं सचिव, महालेखाकार।



कविता पाठ करतीं सुश्री शालू जाटव (लेखाकार)।



महालेखाकार के साथ श्री सुजीत कुमार, पुलिस आयुक्त, सीबीआई संयुक्त रूप से 'हिमज्योति' पत्रिका का विमोचन करते हुए।



टंकण प्रतियोगिता में श्री राहुल कुमार (आशुलिपिक) प्रथम रहे।



टंकण प्रतियोगिता में कु0 शिवांगी (लेखाकार) द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए।



कविता पाठ हेतु पुरस्कार ग्रहण करते
श्री रामबीर सिंह, वरिष्ठ लेखा अधिकारी।



वरिष्ठ उपमहालेखाकार द्वारा वर्णानुक्रम प्रतियोगिता में पुरस्कार लेती
स्व0 श्रीमती प्रियंका लिल्हौरी (लेखाकार)।



हिन्दी समारोह के सफल आयोजन हेतु पुरस्कार प्राप्त करते श्री पी.एस.खड़ाई (व0लेखाधिकारी)।



कार्यालय की महिला कर्मचारियों द्वारा समापन समारोह के मौके पर समूह गान प्रस्तुत किया गया।

भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक द्वारा कौलागढ़ स्थित निर्माणाधीन कार्यालय भवन का निरीक्षण





निर्माणाधीन भवन के सम्बन्ध में जानकारी लेते श्री शशिकांत शर्मा, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक।



सीपीडब्ल्यूडी अधिकारियों द्वारा कार्यालय भवन की प्रगति के सम्बन्ध में जानकारी दी गयी।



निरीक्षण के दौरान भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक (बैठे हुए बांये से दूसरे) के साथ देहरादून स्थित आईएएण्डएडी कार्यालयों के उच्चाधिकारीगण।

विदेशी प्रतिनिधियों हेतु आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम



प्रोजेक्ट मैनेजमेंट वीएलसी का प्रशिक्षण ग्रहण करने आये सांई बाग्लादेश के प्रतिनिधिमण्डल के साथ कार्यालय महालेखाकार (ले0एवंहक0)के अधिकारीगण



श्री पुरुषोत्तम दास, वरिष्ठ उपमहालेखाकार द्वारा 22 अलग–अलग देशों से आये विदेशी प्रतिनिधियों को वीएलसी में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग से सम्बन्धित जानकारी दी गयी।



विदेशी प्रतिनिधियों ने प्रशिक्षण के दौरान व्याख्यानों को ध्यान से सुना, साथ ही काम की बारिकियां भी सीखीं।

वर्ष 2016 में कार्यालय की विभिन्न गतिविधियाँ



गणतंत्र दिवस पर वर्ष 2015–16 के लिये उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रमाण–पत्र और नकद पुरस्कार से सम्मानित अधिकारी एवं कर्मचारी गण।





दिनांक 31.03.2016 को श्री डी.पी. सिंह (सहायक लेखाधिकारी) एवं श्री अरुण ठाकुर (व0लेखाकार) सेवानिवृत्त हुए।



कार्यालय में आग से बचाव की जानकारी हेतु अग्निशमन व दमकल विभाग की ओर से मॉक फायर ड्रिल आयोजित की गई।



आईएमए ब्लड बैंक, उत्तराखण्ड के सौजन्य से दिनांक 19.04.2016 को स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में स्वास्थ्य जांच कराते हुए महालेखाकार महोदय।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (कार्या–1) देहरादून उत्तराखण्ड द्वारा प्रकाशित पत्रिका "दूनवाणी" के प्रकाशन में सहयोग देने हेतु छमाही बैठक में नराकास अध्यक्ष श्री स्वर्ण राव सुब्बा (महासर्वेक्षक) की ओर से प्रशस्ति–पत्र ग्रहण करते श्री दिनेश शर्मा, लेखाकार।



दिनांक 26.05.2016 को नराकास की ओर से आयोजित हिन्दी सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में पुरस्कार ग्रहण करते श्री दिनेश कुमार (सहायक लेखाधिकारी)।



अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21.06.2016 के मौके पर आवासीय परिसर कौलागढ़ में श्री संदीप कुमार, डीईओ द्वारा योग के संबंध में कॉलोनीवासियों को जानकारी दी गई।



मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित वॉलिबॉल प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी।



मनोरंजन क्लब की ओर से आयोजित शतरंज प्रतियोगिता में भाग लेते प्रतिभागी।



बैडमिंटन प्रतियोगिता सम्पन्न होने के पश्चात निर्णायकदल एवं प्रतिभागी।



शिवा ऑफसेट प्रेस, देहरादून द्वारा डिजाइन एवं मुद्रित। फोनः 0135-2715748